जून 2023
खंड - XXXIX | अंक - II

एक्ज़िमिअस: निर्यात लाभ

इस अंक में

- ग्रीन ट्रांजीशन (पर्यावरण के अनुरूप बदलाव) के माध्यम से संपोषी भारत–अफ्रीका साझेदारी करना
- भारत में निर्यात और रोजगार के बीच अंतर–संबंध : अद्यतन स्थिति
- आंध्र प्रदेश से निर्यात बढ़ाना
- भारत–मध्य अमेरिका के बीच व्यापार और निवेश संबंध
- असम की निर्यात संभावनाओं का लाभ उठाना

इंडिया एक्ज़िम बैंक
की तिमाही प्रकाशन
केन्द्र एक भवन, 21 वीं मंज़िल,
विश्व व्यापार केन्द्र संकुल,
कफ़ परेड, मुंबई - 400 005.
फोन: 022 2217 2600
ईमेल: ccg@eximbankindia.in
www.eximbankindia.in
www.eximmitra.in

ग्रीन ट्रांजीशन (पर्यावरण के अनुरूप बदलाव) के माध्यम से संपोषी भारत–अफ्रीका साझेदारी करना

– **सारा जॉय,** *मुख्य प्रबंधक*
श्रीजिता नंदी, *उप–प्रबंधक*

एक परिवर्तनशील और विविधतापूर्ण महाद्वीप, अफ्रीका ने विशाल व्यापार और निवेश संभावनाओं के साथ पिछले दो दशकों में आर्थिक और विकास क्षेत्रों की एक श्रृंखला में उल्लेखनीय प्रगति की है। अफ्रीका का अनुमानित समग्र सकल घरेलू उत्पाद 2022 में 2.98 ट्रिलियन यूएस डॉलर है, जिसके 2023 तक 3 ट्रिलियन यूएस डॉलर से अधिक होने की उम्मीद है।

अफ्रीका में पर्यावरण के अनुकूल व्यापार

किसी देश की पर्यावरणीय वस्तुओं के निर्यात को उसके पर्यावरण के अनुकूल व्यापार के लिए एक प्रॉक्सी के रूप में माना जाता है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार, पर्यावरणीय वस्तुओं में पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी दोनों वस्तुएं शामिल हैं। पहली– प्रदूषण प्रबंधन एवं संसाधन प्रबंधन से संबंधित वस्तुएं। दूसरी– अनुकूलित वस्तुएं, ये ऐसी वस्तुएं हैं जिन्हें विशेष रूप से अधिक पर्यावरण के अनुकूल या स्वच्छ बनाने के लिए संशोधित किया गया है। हरित निर्यात देशों को एक ही समय में आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने में मदद करता है।

पर्यावरणीय वस्तुओं का अफ्रीकी निर्यात 2021 में 12.4 बिलियन यूएस डॉलर रहा। यह 2020 में 8.3 बिलियन यूएस डॉलर एवं 2019 में 8.9 बिलियन यूएस डॉलर रहा। वर्ष 2021 में, अफ्रीका के कुल निर्यात में पर्यावरणीय वस्तुओं की हिस्सेदारी 2.2% रही। यह 2020 में 2.1% और 2019 की 1.9% रही। टोगो एकमात्र अफ्रीकी देश है, जिसके कुल निर्यात में पर्यावरणीय वस्तुओं का निर्यात 2020 में 7.3% के वैश्विक औसत से अधिक रहा।

अफ्रीका में पर्यावरणीय वस्तुओं का आयात 2021 में 37.8 बिलियन यूएस डॉलर रहा। यह 2020 में 33.8 बिलियन यूएस डॉलर और 2019 में 36.9 बिलियन यूएस डॉलर रहा। वर्ष 2021 में अफ्रीका के कुल आयात में पर्यावरणीय वस्तुओं की हिस्सेदारी 6.2% रही। यह 2020 के 6.7% से कम हो गई है। पर्यावरणीय वस्तुओं के आयात के मामले में, नाइजीरिया अफ्रीकी देशों में सबसे आगे है। वर्ष 2020 में इसके कुल आयात में पर्यावरणीय वस्तुओं की हिस्सेदारी 12.6% रही। इसके बाद जिम्बाब्वे और मोजाम्बिक का स्थान आता है। नाइजीरिया और जिम्बाब्वे की पर्यावरणीय वस्तुओं के आयात में हिस्सेदारी 2020 में विश्व औसत 7.9% से अधिक रही है।

भारत–अफ्रीका पर्यावरण के अनुकूल व्यापार

भारत द्वारा अफ्रीका को पर्यावरण संबंधी वस्तुओं का निर्यात 2021 में 1.7 बिलियन यूएस डॉलर रहा। यह 2020 के 1.4 बिलियन यूएस डॉलर और 2019 के 1.5 बिलियन यूएस डॉलर की तुलना में अधिक है। अफ्रीका में भारत

के निर्यात में पर्यावरणीय वस्तुओं की हिस्सेदारी 4.6% रही। जबकि 2020 में यह 5.2% और 2019 में 5% रही। वर्ष 2021 में, पर्यावरणीय वस्तुओं में भारत के कुल निर्यात में अफ्रीका की हिस्सेदारी 10% रही। वहीं, 2021 में अल्जीरिया को किए जाने वाले भारत के निर्यात में पर्यावरणीय वस्तुओं की हिस्सेदारी 24% रही और 2020 की 9.7% हिस्सेदारी की तुलना में तेज उछाल देखा गया। भारत की पर्यावरणीय वस्तुओं के निर्यात में हिस्सेदारी के मामले में अल्जीरिया के बाद बुरुंडी, सेशेल्स और घाना का स्थान है। वर्ष 2021 में भारत से किए जाने वाले पर्यावरणीय वस्तुओं के निर्यात में लेसोथो, बोत्सवाना, टोगो, कोमोरोस और चाड जैसे अफ्रीकी देशों की सबसे कम हिस्सेदारी रही।

अफ्रीका से भारत का पर्यावरणीय वस्तुओं का आयात 2021 में 296 मिलियन यूएस डॉलर रहा। यह 2020 के 158.6 मिलियन यूएस डॉलर और 2019 के 193.8 मिलियन यूएस डॉलर से अधिक है। वर्ष 2021 में भारत की पर्यावरणीय वस्तुओं के वैश्विक आयात में अफ्रीका का योगदान सिर्फ 0.9% रहा। इसी तरह, अफ्रीका से भारत के कुल आयात में पर्यावरणीय वस्तुओं की हिस्सेदारी महज 0.7% रही, जो 2020 की 0.6% और 2019 की 0.5% से अधिक है। अफ्रीकी अर्थव्यवस्थाओं के संबंध में, अल्जीरिया भारत के लिए पर्यावरणीय वस्तुओं का एक प्रमुख आयात स्रोत बना हुआ है। वर्ष 2021 में अल्जीरिया से भारत के आयात में पर्यावरणीय वस्तुओं की हिस्सेदारी 7.2% रही और 2020 की 3.3% हिस्सेदारी की तुलना में तेज उछाल देखने को मिला। अल्जीरिया के बाद लीबिया, सेशेल्स और मिस्र का स्थान रहा।

अफ्रीका में जलवायु वित्तपोषण

वैश्विक स्तर पर कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन के मामले में अफ्रीका की हिस्सेदारी अब भी सबसे कम है। हालाँकि यह वर्ष 2000 की 3.5% से बढ़कर 2020 में 3.8% हो गई है। जबकि दुनिया की आबादी में इसकी 16% हिस्सेदारी है। क्लाइमेट पॉलिसी इनीशिएटिव अफ्रीका 2022 के अनुसार, अफ्रीका में राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) को लागू करने की कुल लागत 2020–2030 तक 2.8 ट्रलियन यूएस डॉलर होने का अनुमान है। इसमें से, अफ्रीकी सरकारों ने 264 बिलियन यूएस डॉलर (लगभग 10%) प्रदान करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है। शेष 2.5 ट्रिलियन यूएस डॉलर को जलवायु वित्त आवश्यकताओं के लिए रखा गया है। वर्ष 2019 और 2020 में अफ्रीका के लिए जलवायु वित्त में वार्षिक औसतन 29.5 बिलियन यूएस डॉलर की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई। यह 2030 तक अफ्रीका के एनडीसी और जलवायु संबंधी लक्ष्यों को कार्यान्वित करने के लिए सालाना अनुमानित 277 बिलियन यूएस डॉलर की जलवायु वित्तपोषण की आवश्यकताओं का सिर्फ 11% प्रतिनिधित्व करता है। अफ्रीका में सार्वजनिक जलवायु वित्त प्रवाह 2019 के 22.3 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2020 में 24.3 बिलियन यूएस डॉलर हो गया। वर्ष 2019–2020 के दौरान बहुपक्षीय विकास वित्तीय संस्थान महाद्वीप में सार्वजनिक जलवायु वित्त का सबसे बड़ा स्रोत (कुल अंतरराष्ट्रीय सार्वजनिक जलवायु वित्त प्रवाह का लगभग 40%) रहे। इसके बाद द्विपक्षीय डीएफआई (22%), अंतरराष्ट्रीय सरकारें (16%) और जलवायु कोष (4%) सहित द्विपक्षीय विकास भागीदार रहे। अफ्रीका में जलवायु संबंधी परियोजनाओं को 2019–2020 के दौरान निजी निवेश में 4.2 बिलियन यूएस डॉलर प्राप्त हुए, जो कुल जलवायु वित्त प्रवाह का महज 14% है। दक्षिण अफ्रीका, नाइजीरिया, केन्या, मोरक्को और मिस्र जैसे देशों में निजी वित्त का 50% से अधिक योगदान है। कुल मिलाकर, अफ्रीका में जलवायु वित्तपोषण में ऊर्जा प्रणालियों (31.8%) की सबसे अधिक हिस्सेदारी है, इसके बाद कृषि, वानिकी और अन्य भूमि उपयोग (15.7%) और जल एवं अपशिष्ट जल क्षेत्रों (9.3%) का स्थान रहा।

भारत–अफ्रीका व्यापार और निवेश के लिए पर्यावरण अनुकूल व्यवसाय में अवसर

अफ्रीका को पिछले दशक के दौरान इसके प्रचुर संसाधनों और बढ़ते बाजारों के अलावा व्यापक विकास आवश्यकताओं के कारण काफी निवेश प्राप्त हो रहा है। उदाहरण के लिए, 2013 से 2022 के बीच अफ्रीका में परिकल्पित पूंजी निवेश को आकर्षित करने वाले क्षेत्रों में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी 24% रही। इस अवधि के दौरान संयुक्त अरब अमीरात, भारत और फ्रांस ने अफ्रीका में नवीकरणीय ऊर्जा निवेश में एक तिहाई से अधिक का योगदान दिया। चूंकि अफ्रीका में वैश्विक निवेश निष्कर्षण और अन्य पारंपरिक क्षेत्रों से आगे बढ़ रहा है, इसलिए टिकाऊ कृषि व्यवसाय से लेकर नवीकरणीय ऊर्जा तक नई मूल्य श्रृंखलाओं में अवसर फल–फूल रहे हैं। भारत, इस क्षेत्र के लिए एक विश्वसनीय विकास भागीदार होने के नाते, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने और उनको कम करने के लिए ग्रीन ट्रांजीशन पर ध्यान क्रेंदित करने के साथ अफ्रीका से अपने जुड़ाव को मजबूत करने और आगे बढ़ाने के लिए नए रास्ते तलाश रहा है। अफ्रीकी देश और भारत निम्न क्षेत्रों में पारस्परिक रूप से सार्थक सहयोग कर सकते हैं।

स्वच्छ ऊर्जा में निवेश

अफ्रीका में प्राकृतिक गैस के अलावा ऊर्जा के दोहन की अपार संभावनाएं हैं। यह महाद्वीप संपोषी विकास का समर्थन करते हुए अपने लोगों की जरूरतों को पूरा करने और औद्योगिकीकरण के लिए पर्याप्त स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन कर सकता है; हालांकि, इसमें आवश्यक तकनीक अभाव है। भारत अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन में अपनी भागीदारी के माध्यम से अफ्रीका के सौर संसाधनों का दोहन करने में अग्रणी के रूप में महत्त्वपूर्ण लाभ ले सकता है। इसलिए, भारत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, क्षमता निर्माण और यहां तक कि रोजगार के अवसर प्रदान करके एक सहयोगी मंच स्थापित करने में अहम भूमिका निभा सकता है।

क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर

अफ्रीका में कृषि, मत्स्य पालन और अन्य भूमि उपयोग क्षेत्र रोजगार का एक प्रमुख स्रोत हैं और इस महाद्वीप के उत्सर्जन में 57% के हिस्सेदार है। अफ्रीका की विविध फसलों और क्षेत्रों को उपज के पूर्वानुमान, जोखिम को कम करने और संसाधन आवंटन को अनुकूलित करने के लिए जलवायु परिवर्तनशीलता डेटा के आधार पर फसल–विशिष्ट मॉडल की आवश्यकता होती है। स्मार्ट खेती डिजिटल और भौतिक बुनियादी ढांचे को एकीकृत करने और प्रौद्योगिकी अंतर को पाटने का अवसर प्रदान करती है। भारतीय कृषि–आधारित स्टार्ट–अप अफ्रीका के छोटे और सीमांत किसानों को व्यवहार्य और किफायती समाधान प्रदान करके महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ये स्टार्ट–अप डिजिटल उपकरणों तक पहुंच को संभव बनाते हैं और उनके कृषि कार्यों की दक्षता और लाभप्रदता में सुधार करने में मदद कर सकते हैं।

जल और जल अपशिष्ट प्रबंधन

कई अफ्रीकी देश सूखे और बाढ़ के प्रति संवेदनशीलता, मौसमी परिवर्तनशीलता और उपलब्ध पानी के लिए प्रतिस्पर्धा जैसे कई कारकों के कारण अत्यधिक

जोखिम में हैं। चूंकि जलवायु परिवर्तन से वर्षा अधिक अनियमित हो जाती है और बाढ़ एवं सूखे का खतरा बढ़ जाता है, इसलिए बेहतर जल प्रबंधन एवं बुनियादी ढांचे में निवेश करना और भी महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है। उप–सहारा अफ्रीका में सभी के लिए सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता और साफ–सफाई सुनिश्चित करने के लिए प्रति वर्ष 35 बिलियन यूएस डॉलर की आवश्यकता होगी। भारत और अफ्रीका जल पुनर्चक्रण, जल स्वच्छता और शोधन जैसे क्षेत्रों में सहयोग कर सकते हैं ताकि स्वच्छ जल तक पहुंच के मामले में अफ्रीका की सुदृढ़ता को बढ़ाया जा सके।

स्वच्छ ऊर्जा और सुदृढ़ परिवहन के लिए हरित खनिजों में निवेश

स्वच्छ ऊर्जा ट्रांजीशन के लिए आवश्यक खनिजों और बैटरी एवं ईवी जैसी प्रौद्योगिकियों –लीथियम, कोबाल्ट, तांबा, प्लैटिनम, मैंगनीज, आदि– की मांग बढ़ रही है। इनमें से कई खनिज अफ्रीका में प्रचुर मात्रा में हैं। अफ्रीकी देश दुर्लभ तत्त्वों के नए स्रोतों की मांग का लाभ उठा सकते हैं ताकि मुख्य सामाजिक आर्थिक उद्देश्यों के वित्तपोषण और गरीबी को कम करने, मूल्यसंवर्धन में सुधार करने और वैश्विक व्यापार साझेदारी को मजबूत करने के लिए बहुत जरूरी राजस्व जुटाया जा सके। ये खनिज घरेलू ऊर्जा पहुंच के लिए नवीकरणीय ऊर्जा विकास का भी समर्थन करेंगे, पूरे महाद्वीप में एक संधारणीय परिवहन ढांचे में ट्रांजीशन की सुविधा प्रदान करेंगे। इस प्रकार, कम कार्बन ट्रांजीशन में तेजी लाएंगे।

अफ्रीकी महाद्वीपीय मुक्त व्यापार क्षेत्र (एएफसीएफटीए) वैश्विक ईवी ट्रांजीशन का समर्थन कर सकता है। साथ ही, विशेष रूप से बुनियादी ढांचे और पूंजी संबंधी बाधाओं को ध्यान में रखते हुए, देशों को क्षेत्रीय स्वच्छ ऊर्जा मूल्य श्रृंखला का निर्माण करने में सक्षम बना सकता है। इस तरह, इन संसाधनों का लाभ उठाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारत बैटरी और इलेक्ट्रिक मूल्य श्रृंखला की मांग से लाभ को अनुकूलित करने के लिए अफ्रीकी खनन मूल्य श्रृंखला में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

हरित ईंधन में रणनीतिक सहयोग

वर्ष 2050 तक हरित हाइड्रोजन उत्पादन के वैश्विक ऊर्जा स्रोतों के लगभग 25% तक पहुंचने की उम्मीद है। इसमें अफ्रीका एक महत्त्वपूर्ण हिस्सेदारी प्राप्त करने की क्षमता रखता है। कई अफ्रीकी देशों, विशेष रूप से दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, मोरक्को और नामीबिया में संपूर्ण संधारणीय हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था विकसित करने की क्षमता है। अफ्रीकी हाइड्रोजन साझेदारी, हरित हाइड्रोजन, हाइड्रोजन आधारित रसायन और ईंधन सेल प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए समर्पित महाद्वीप–व्यापी संबद्ध संघ, 2018 में स्थापित किया गया। भारत का लक्ष्य दुनिया का सबसे बड़ा हाइड्रोजन हब बनना है। भारत में हाइड्रोजन की मांग 2050 तक चार गुना से अधिक बढ़ने की उम्मीद है, जो वैश्विक हाइड्रोजन मांग का लगभग 10% है। भारत और अफ्रीका उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी विकास के मामले में सहयोग कर सकते हैं, हरित हाइड्रोजन के निर्यात को संभव बना सकते हैं। अधिक कुशल और किफायती प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए अनुसंधान और विकास को बढ़ावा दे सकते हैं और अंतरराष्ट्रीय साझेदारी स्थापित कर सकते हैं।

चक्रीय अर्थव्यवस्था को मुख्यधारा में लाना

वर्ष 2030 को ध्यान में रखते हुए, अफ्रीका की उपभोक्ता मांग में अनुमानित तेजी से वृद्धि, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में, अवसर और चुनौतियों दोनों प्रस्तुत करती है। संसाधनों की बर्बादी और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए इन मांगों को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए, एक चक्रीय उत्पादन मॉडल में बदलाव महत्त्वपूर्ण है। भारतीय कंपनियां चक्रीय अर्थव्यवस्थाओं और अपशिष्ट प्रबंधन को विकसित करने के लिए उपभोक्ता वस्तुओं, वस्त्र और फैशन, खनन एवं इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों में विभिन्न अफ्रीकी कंपनियों के साथ निवेश और सहयोग कर सकती हैं।

18वें सीआईआई– एक्ज़िम बैंक कॉन्क्लेव के दौरान इंडिया एक्ज़िम बैंक के प्रकाशनों का विमोचन

हाल ही में भारत–अफ्रीका विकास साझेदारी पर सीआईआई–एक्ज़िम बैंक कॉन्क्लेव के 18वें संस्करण का आयोजन किया। यह आयोजन इंडिया एक्ज़िम बैंक और भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) ने विदेश मंत्रालय और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से किया। इस वर्ष के कॉन्क्लेव का विषय `क्रिएटिंग वन फ्यूचर' (एक भविष्य का निर्माण) रहा। पहला कॉन्क्लेव 2005 में नई दिल्ली में आयोजित किया गया था और पिछले कुछ वर्षों में यह कॉन्क्लेव भारत और अफ्रीका के बीच साझेदारी बनाने और आर्थिक संबंधों को बढ़ाने में प्रमुख कार्यक्रम के रूप में उभरा है। इस कॉन्क्लेव में पूरे अफ्रीका और भारत के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों की भागीदारी देखने को मिली। भारत–अफ्रीका विकास साझेदारी पर सीआईआई–एक्ज़िम बैंक कॉन्क्लेव के 18वें संस्करण का उद्घाटन 14 जून 2023 को नई दिल्ली में भारत सरकार के माननीय विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने किया। बड़ी संख्या में भारतीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए डॉ. एस जयशंकर ने इस बात पर जोर दिया कि वैश्विक पुनर्संतुलन के लिए अफ्रीका का उदय महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि भारत अफ्रीका की जरूरतों और प्राथमिकताओं के आधार पर विकास साझेदारी बनाने में विश्वास करता है। इस कार्यक्रम में भारत एक्ज़िम बैंक के दो प्रकाशनों– `फोर्जिंग सस्टेनेबल इंडिया–अफ्रीका पार्टनरशिप थ्रू ग्रीन ट्रांजीशन' और `इंडियाज इंवेस्टमेंट पोटेंशल इन अफ्रीका'– का भी विमोचन किया गया। ■

भारत में निर्यात और रोजगार के बीच अंतर–संबंध : अद्यतन स्थिति

(इंडिया एक्ज़िम बैंक स्टडीज पर आधारित)

आने वाले वर्षों में वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (जीवीसी) का संभावित पुनर्गठन भारत को विनिर्माण निर्यात के लिए असेंबली हब के रूप में चीन की जगह लेने का अवसर प्रदान करता है। इससे बढ़ती युवा आबादी के लिए लाखों नौकरियां सृजित हो सकती है। इस संदर्भ में, निर्यात और घरेलू रोजगार सृजन के बीच संबंधों की प्रकृति को समझना महत्त्वपूर्ण है। आगत–निर्गत (आईओ) विश्लेषण का उपयोग करते हुए, 1995–2018 की अवधि के लिए भारत के माल एवं सेवा निर्यात द्वारा सृजित नौकरियों की संख्या के समग्र और क्षेत्र स्तर के समय श्रृंखला अनुमान का उपयोग किया गया। अनुमानों के दो सेट बताए गए हैं। अनुमान का पहला सेट, 1995–2018 की अवधि और 45 क्षेत्रों के लिए ओईसीडी के `ट्रेड इन एम्प्लॉयमेंट' (टीआईएम) डेटाबेस से प्राप्त किया गया है। अनुमान का दूसरा सेट, 2011–12 से 2017–18 की अवधि और 63 क्षेत्रों के लिए केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा तैयार भारत की आधिकारिक आपूर्ति उपयोग सारणियों (एसयूटी) पर आधारित है।

समग्र स्तर अनुमान

ओईसीडी–टीआईएम के अनुमानों के अनुसार, भारतीय निर्यात द्वारा समर्थित नौकरियों की कुल संख्या 1995 की 35.7 मिलियन से बढ़कर 2008 में 73.9 मिलियन हो गई। वैश्विक वित्तीय संकट के बाद इस वृद्धि का रुझान कुछ समय के लिए रुक गया क्योंकि निर्यात से संबंधित नौकरियों की संख्या 2009 में घटकर 65.1 मिलियन और 2010 में 70.1 मिलियन हो गई। हालांकि, जैसे–जैसे निर्यात वृद्धि में तेजी आई, निर्यात से संबंधित नौकरियों की संख्या 2011 में बढ़कर 75.1 मिलियन हो गई और 2012 में 75.6 मिलियन के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। चूंकि 2012 के बाद की अवधि में निर्यात वृद्धि धीमी हो गई और निर्यात से संबंधित नौकरियों की संख्या धीरे–धीरे घटकर 2018 में 58.2 मिलियन हो गई।

वर्ष 2011–12 से 2017–18 की अवधि के लिए आपूर्ति उपयोग सारणी (एसयूटी) आधारित अनुमान टीआईम अनुमान के समान हैं। एसयूटी आधारित अनुमानों के अनुसार, भारत के निर्यात ने 2017–18 में 58.1 मिलियन नौकरियां सृजित की। निर्यात से संबंधित नौकरियों में 2012 तक कुल रोजगार की तुलना में काफी तेजी से वृद्धि हुई। कुल रोजगार में निर्यात आधारित नौकरियों की हिस्सेदारी 1995 में 9% से थोड़ी अधिक बढ़कर 2012 में 16.1% के स्तर पर पहुंच गई और 2018 में घटकर 12.2% हो गई। बैकवर्ड लिंकेज के माध्यम से अप्रत्यक्ष रोजगार निर्यात द्वारा समर्थित कुल रोजगार का आधे से अधिक है। अनुमानों से पता चलता है कि 1 मिलियन यूएस डॉलर मूल्य के निर्यात ने 2018 में 108 नौकरियां सृजित की, जो 1995 की लगभग 889 नौकरियों से कम है। यह रुझान, आंशिक रूप से श्रम उत्पादकता में सुधार के कारण और आंशिक रूप से कौशल आधारित एवं पूंजी आधारित उत्पादों के प्रति निर्यात संरचना में परिवर्तन के कारण, कई अन्य देशों के लिए देखे गए पैटर्न के अनुरूप है। पिछले कुछ वर्षों में गिरावट के बावजूद, भारतीय निर्यात का रोजगार सृजन अमेरिका और चीन सहित अन्य प्रमुख देशों के लिए उपलब्ध समान अनुमानों से अधिक पाया गया है। उदाहरण के लिए, 1 मिलियन यूएस डॉलर के निर्यात से अमेरिका में 2009 में केवल 6.6 नौकरियां और 2014 में 5.2 नौकरियां पैदा हुईं। वहीं, चीन के लिए उपलब्ध अनुमानों से पता चलता है कि 2007 में 1 मिलियन यूएस डॉलर के निर्यात से 140 नौकरियां पैदा हुईं जबकि इसी वर्ष भारत में 282 नौकरियां पैदा हुईं।

क्षेत्रों के लिए अनुमान

कृषि उत्पादों के निर्यात से सृजित नौकरियों की कुल संख्या 1995 के 3.2 मिलियन (कुल निर्यात से संबंधित नौकरियों का 8.9%) से बढ़कर 2012 में 8 मिलियन के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। यह 2018 में फिर घटकर 3.4 मिलियन (कुल निर्यात से संबंधित नौकरियों का 5.8%) हो गई। आपूर्ति उपयोग सारणी (एसयूटी) आधारित अनुमानों से कृषि के लिए एक समान रुझान देखने को मिलता है। वर्ष 2012–13 में 7.3 मिलियन नौकरियां रहीं, जो 2017–18 में घटकर 4.3 मिलियन हो गई।

विनिर्माण निर्यात से संबंधित नौकरियों की संख्या 1995 के 23.2 मिलियन से दोगुनी होकर 2013 में 47.5 मिलियन हो गई। हालांकि, जैसे–जैसे भारत की निर्यात वृद्धि धीमी हुई और 2018 तक यह धीरे–धीरे घटकर 33 मिलियन हो गई। एसयूटी आधारित अनुमानों से पता चलता है कि विनिर्माण निर्यात ने 2011–12 में 54.1 मिलियन नौकरियों (कुल निर्यात से सबंधित नौकरियों का 78%) की तुलना में 2017–18 में 43.4 मिलियन नौकरियां (कुल निर्यात से संबंधित नौकरियों का 74.7%) पैदा कीं। सेवा निर्यात से पैदा हुई नौकरियों की संख्या 1995 के 9.3 मिलियन (कुल निर्यात से संबंधित नौकरियों का 26%) से बढ़कर 2012 में 20.9 मिलियन और 2018 में 21.8 मिलियन (कुल निर्यात से संबंधित नौकरियों का 37.5%) हो गई।

कृषि और विनिर्माण के उलट, 2012 के बाद की अवधि के दौरान सेवा क्षेत्र से निर्यात के कारण नौकरियों में गिरावट नहीं आई है। एसयूटी आधारित अनुमानों से पता चलता है कि 2017–18 में लगभग 10.4 मिलियन नौकरियों का श्रेय सेवा निर्यात को दिया जा सकता है, जो 2011–12 के 9.2 मिलियन से अधिक है। अप्रत्यक्ष रोजगार आमतौर पर विनिर्माण क्षेत्र के लिए कुल निर्यात आधारित नौकरियों को 60% होता है। इसका अर्थ है कि विनिर्माण निर्यात बैकवर्ड लिंकेज प्रभावों के माध्यम से कृषि और सेवा क्षेत्रों में रोजगार पैदा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके उलट, कृषि और सेवाओं के निर्यात से संबंधित रोजगार का एक बड़ा हिस्सा प्रत्यक्ष प्रभावों के कारण है। यह देखा जा सकता है कि 1 मिलियन यूएस डॉलर मूल्य के कृषि निर्यात से 2018 में लगभग 350 नौकरियां सृजित हुई। कृषि की तुलना में, 2018 में 1 मिलियन यूएस डॉलर मूल्य के विनिर्माण एवं सेवा निर्यात से संबंधित नौकरियों की संख्या बहुत कम रही। यह संख्या क्रमशः लगभग 127 और 97 नौकरियों की रही। हालांकि, यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि विनिर्माण और सेवाओं में सृजित रोजगार आमतौर पर कृषि की तुलना में बेहतर भुगतान करते हैं।

जेंडर (लैंगिक) के आधार पर अनुमान

वर्ष 2017–18 में, कुल निर्यात ने पुरुषों के लिए लगभग 43.4 मिलियन रोजगार (कुल निर्यात से संबंधित रोजगार का लगभग तीन–चौथाई) और महिलाओं के लिए 14.7 मिलियन रोजगार पैदा किए। कृषि उत्पादों के निर्यात ने पुरुषों के लिए लगभग 3 मिलियन रोजगार और महिलाओं के लिए 1.3 मिलियन रोजगार पैदा किए। कृषि क्षेत्र में कुल निर्यात से संबंधित रोजगार में महिला रोजगार लगभग 29% है। विनिर्माण निर्यात ने पुरुषों के लिए लगभग 32 मिलियन रोजगार और महिलाओं के लिए 11.4 मिलियन रोजगार पैदा किए है। सेवाओं के निर्यात ने पुरुषों के लिए 8.3 मिलियन रोजगार और महिलाओं के लिए 2.1 मिलियन रोजगार पैदा किए।

विनिर्माण क्षेत्र में, `पहनने वाले परिधान' का निर्यात महिलाओं के लिए निर्यात से संबंधित रोजगार की सबसे बड़ी संख्या (लगभग 2 मिलियन में से लगभग 80% प्रत्यक्ष रोजगार) पैदा करता है। इसके बाद `वस्त्र' (1.6 मिलियन), `अनाज मिल उत्पाद' (1.5 मिलियन), `मांस, मछली, फल, सब्जियां, तेल और वसा' (1.3 मिलियन) और `अन्य विनिर्माण' (1.3 मिलियन) शामिल हैं। विनिर्माण क्षेत्र, जो पुरुषों के लिए निर्यात से संबंधित रोजगार के मामले में सबसे बड़ी संख्या में रोजगार पैदा करता है, उनमें `विविध विनिर्माण' (5.8 मिलियन, मुख्य रूप से रत्न और आभूषण का योगदान), `वस्त्र' (3.6), `अनाज मिल उत्पाद' (3.6 मिलियन), `पहनने वाले परिधान' (3.4) और मांस, मछली, फल, सब्जियां, तेल एवं वसा (3.2 मिलियन) शामिल हैं। सेवाओं के तहत, जिन क्षेत्रों में महिलाओं के लिए निर्यात से संबंधित रोजगार की सबसे बड़ी संख्या दर्ज की गई उनमें `आईटी और सूचना सेवाएं' (0.8 मिलियन), `शिक्षा एवं अनुसंधान' (0.5 मिलियन) और `अन्य व्यावसायिक सेवाएं (0.3 मिलियन) शामिल हैं। जो क्षेत्र पुरुषों के लिए भी बड़ी संख्या में रोजगार पैदा करते हैं, उनमें `आईटी एवं सूचना सेवाएं' (3.7 मिलियन), `अन्य व्यावसायिक सेवाएं' (1.9 मिलियन) और `शिक्षा एवं अनुसंधान' (0.7 मिलियन) हैं।

क्षेत्र समूह स्तर पर, विनिर्माण और सेवाएं समग्र स्तर पर समान पैटर्न दिखाती हैं। जबकि कृषि के लिए एक अलग पैटर्न देखा जा सकता है। इस प्रकार, विकास के प्रमुख कारक के रूप में विनिर्माण और सेवाओं के निर्यात पर आधारित रणनीति, ज्यादातर घरेलू बाजार में बिक्री पर आधारित रणनीति की तुलना में महिलाओं के लिए अधिक रोजगार के अवसर पैदा कर सकती है।

श्रमिकों की शैक्षणिक उपलब्धि का अनुमान

जैसा कि तालिका में देखा जा सकता है, 2017–18 में, समग्र स्तर पर, कुल निर्यात से संबंधित नौकरियों के लगभग 21% (12.6 मिलियन) में बिना औपचारिक स्कूली शिक्षा वाले श्रमिक हैं। इन नौकरियों का बड़ा हिस्सा विनिर्माण निर्यात (10.2 मिलियन) और मुख्य रूप से (81%) इसके बैकवर्ड लिंकेज से पैदा होता है। कुल निर्यात से संबंधित नौकरियों में से लगभग 18% (10.7 मिलियन) प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा हासिल करने वाले श्रमिकों के लिए सृजित की गई। इनमें से अधिकांश नौकरियों (9 मिलियन) का श्रेय विनिर्माण निर्यात को जाता है। कुल निर्यात से पैदा होने वाली नौकरियों में मिडिल स्कूल तक शिक्षा हासिल करने वाले श्रमिकों की हिस्सेदारी 22% (13 मिलियन) है, जिनमें से 10.6 मिलियन नौकरियां विनिर्माण निर्यात से संबद्ध है।

निर्यात से संबद्ध नौकरियों की कुल संख्या में से, लगभग 37.5% अपेक्षाकृत उच्च कौशल वाली नौकरियां पाई गई। इसमें माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा हासिल करने वाले श्रमिकों के लिए 21.4% नौकरियां (12.4 मिलियन) और डिप्लोमा धारकों, स्नातकों और स्नातकोत्तर की श्रेणी के लिए 16.1% नौकरियां (9.4 मिलियन) शामिल हैं। माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा हासिल करने वाले श्रमिकों के लिए कुल निर्यात से संबंधित नौकरियों में से लगभग 76% (9.4 मिलियन) विनिर्माण निर्यात से आती है। दूसरी ओर, डिप्लोमा धारकों, स्नातकों और स्नातकोत्तरों की श्रेणी के लिए कुल निर्यात से संबंधित नौकरियों के आधे से अधिक (55%, 5.1 मिलियन) में सेवा क्षेत्र के निर्यात का योगदान है। अपेक्षानुरूप, प्रत्यक्ष प्रभाव के कारण 76% उच्च कुशल नौकरियों के लिए सेवा निर्यात का योगदान रहा।

घरेलू बाजार के लिए उत्पादन की तुलना में निर्यात अधिक कुशल नौकरियों को सृजित करने की ज्यादा संभावना प्रदान करता है। मिडिल स्कूल स्तर से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली श्रेणियों के लिए निर्यात समूह कुल उत्पादन समूह की तुलना में रोजगार की अधिक हिस्सेदारी से संबद्ध है।

तालिका: श्रमिकों की शैक्षिक योग्यता के अनुसार निर्यात से सृजित रोजगार, 2017–18, मिलियन में

	कोई औपचारिक शिक्षा नहीं*	प्राथमिक स्कूल तक	माध्यमिक स्कूल	माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक	डिप्लोमा और उससे ऊपर**	कुल
कृषि	1.53	0.91	0.94	0.75	0.20	4.33
विनिर्माण	10.16	8.96	10.62	9.43	4.04	43.20
सेवा	0.92	0.80	1.46	2.26	5.13	10.58
कुल	**12.62**	**10.67**	**13.02**	**12.44**	**9.37**	**58.11**

नोट : ये अनुमान एसयूटी पर आधारित हैं। टीआईएम डेटाबेस शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर विवरण प्रदान नहीं करता।

* इस समूह में वे श्रमिक शामिल हैं जो `साक्षर नहीं' और औपचारिक स्कूली शिक्षा के बिना साक्षर हैं,

** इस समूह में वे श्रमिक शामिल हैं जिन्होंने `डिप्लोमा/सर्टिफिकेट कोर्स, `स्नातक' और स्नातकोत्तर या उससे ऊपर शिक्षा प्राप्त की है। ■

आंध्र प्रदेश से निर्यात बढ़ाना

– **जाह्नवी सिंह,** *मुख्य प्रबंधक*
नेहा रमन, *उप–प्रबंधक*

अवलोकन

व्यापारिक (मर्चेंडाइज) निर्यात के मामले में आंध्र प्रदेश भारतीय राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में छठें स्थान पर है। वर्ष 2022–23 के दौरान भारत के कुल व्यापारिक निर्यात में इसकी हिस्सेदारी 4.4% रही। राज्य का व्यापारिक निर्यात 2022–23 में 19.9 बिलियन यूएस डॉलर रहा। वर्ष 2018–19 से 2022–23 के दौरान इसमें 9.0% की सीएजीआर दर्ज की गई। यह इसी अवधि के दौरान भारत के व्यापारिक निर्यात द्वारा दर्ज की गई 8.1% की सीएजीआर से अधिक है। राज्य के व्यापारिक निर्यात में 2022–23 में वर्ष–दर–वर्ष वृद्धि 3.1% दर्ज की गई।

प्रमुख उत्पाद और बाजार

आंध्र प्रदेश के व्यापारिक निर्यात में 2022–23 के दौरान समुद्री उत्पादों की सबसे अधिक हिस्सेदारी रही। इसके बाद जहाजों, नावों और फ्लोटिंग सरंचना (7.7% की हिस्सेदारी), लोहा एवं इस्पात (6.8%), दवाओं के फॉर्मूलेशन और जैविक (6.6%) तथा मोटर वाहनों/कारों (5.5%) का स्थान रहा। बाजारों के संदर्भ में, 2022–23 के दौरान राज्य से माल निर्यात में लगभग 21% की हिस्सेदारी के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका आंध्र प्रदेश से निर्यात के लिए सबसे बड़ा स्थल है। इसके बाद चीन (5.4%), सिंगापुर (4.2%), और संयुक्त अरब अमीरात (4%) का स्थान है।

आंध्र प्रदेश से निर्यात की संभावना

इंडिया एक्ज़िम बैंक के शोध के अनुसार, राज्य में लगभग 11.1 बिलियन यूएस डॉलर की अप्रयुक्त व्यापारिक निर्यात क्षमता है। इस क्षमता का उपयोग करने से राज्य से व्यापारिक निर्यात लगभग 30.4 बिलियन यूएस डॉलर तक बढ़ सकता है। मध्यम अवधि में, आंध्र प्रदेश में 2027–28 तक 60 बिलियन यूएस डॉलर का कुल निर्यात (माल एवं सेवाओं को मिलाकर) हासिल करने की क्षमता है। जबकि भारत के कुल निर्यात (माल एवं सेवाएं) में इसकी हिस्सेदारी लगभग 2.9% के मौजूदा स्तर से लगभग 4.5% हो गई है।

निर्यात बढ़ाने की रणनीतियां

निर्यात के उच्च स्तर को हासिल करने के लिए, आंध्र प्रदेश को एक मजबूत निर्यात रणनीति अपनाने की आवश्यकता है। ऐसी, जो उत्पादों और बाजारों के विविधीकरण, बुनियादी ढांचे का लाभ उठाने एवं सुदृढ़ीकरण, क्षमता निर्माण, वित्तीय प्रोत्साहन, निर्यात संवर्धन अभियान और संस्थागत सुव्यवस्थितीकरण के छह आवश्यक आयामों पर आधारित हो।

निर्यात रणनीति के प्रमुख स्तंभ

उत्पादों और बाजारों पर फोकस करने हेतु विविधीकरण

इंडिया एक्ज़िम बैंक के विश्लेषण से पता चलता है कि हाल की अवधि के दौरान राज्य से माल निर्यात में वृद्धि हुई है, लेकिन यह कुछ उत्पादों पर केंद्रित है। आंध्र प्रदेश के व्यापारिक निर्यात के विश्लेषण से पता चलता है कि 2022–23 के दौरान आंध्र प्रदेश से कुल व्यापारिक निर्यात में शीर्ष 10 निर्यात वस्तुओं और शीर्ष 10 निर्यात स्थलों की हिस्सेदारी क्रमशः लगभग 63.8% और 50.7% रही। आंध्र प्रदेश के निर्यातकों को उच्च मूल्यवर्धित क्षेत्रों और अपेक्षाकृत कम दोहन किए गए भौगोलिक क्षेत्रों में विविधता लाने की आवश्यकता है।

इंडिया एक्ज़िम बैंक के विश्लेषण से पता चलता है कि आंध्र प्रदेश को समुद्री उत्पादों जैसे जैविक रसायन; फार्मास्यूटिकल्स; लोहा और इस्पात; जहाज, नाव और फ्लोटिंग संरचना; मशीनरी और पार्ट्स; विद्युत उपकरण आदि क्षेत्रों में उत्पादों के निर्यात में तुलनात्मक रूप से लाभ होता है। अल्प से मध्यम अवधि में, आंध्र प्रदेश इन क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाले अवसरों का लाभ उठाने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। इससे राज्य इस लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकता हैं।

मध्यम से दीर्घावधि में, राज्य को उन क्षेत्रों में क्षमताओं के विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, जहां राज्य में तुलनात्मक रूप से लाभ कम है, लेकिन मजबूत वैश्विक मांग मौजूद है। इसमें स्टैटिक कन्वर्टर्स, मोबाइल

फोन, लोहे और इस्पात की वस्तुएं, कंस्ट्रक्शन मशीनरी के कलपुर्जे आदि जैसे उत्पाद शामिल हैं। इन उत्पादों को घटती वैश्विक मांग और कीमतों में उतार–चढ़ाव के मद्देनजर राज्य के निर्यात के लिहाज से लचीलापन प्रदान करने के लिए लक्षित किया जा सकता है।

इसके अलावा, विश्लेषण में यह भी बताया गया है कि पहचान की गई कई उत्पाद श्रेणियों में, शीर्ष वैश्विक आयातक आंध्र प्रदेश के शीर्ष निर्यात–स्थल में शामिल नहीं हैं। राज्य के निर्यातकों के लिए जर्मनी, जापान, यूके, नीदरलैंड, इटली और बेल्जियम जैसी कई विकसित अर्थव्यवस्थाओं सहित प्रमुख वैश्विक बाजारों के बीच विविधता लाने की पर्याप्त गुंजाइश बनी हुई है। इन शीर्ष बाजारों में आंध्र प्रदेश के उत्पादों की पहुंच बढ़ाने के लिए एक बाजार प्रवेश रणनीति की आवश्यकता है।

बुनियादी ढांचे का लाभ उठाना और सुदृढ़ीकरण

राज्य को परिवहन, भंडारण संबंधी बुनियादी ढांचे के साथ–साथ सेवा क्षेत्र के लिए बुनियादी ढांचे सहित मौजूदा निर्यात संबंधी बुनियादी ढांचे को उन्नत करने की आवश्यकता है। परिवहन के क्षेत्र में सड़क परिवहन नेटवर्क, एयर कार्गो सुविधाओं और अंतर्देशीय जलमार्ग नेटवर्क को मजबूत करने की आवश्यकता है। पश्चिम गोदावरी, कृष्णा और चित्तूर जिलों में अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (आईसीडी) स्थापित करने की भी आवश्यकता है, जो वर्तमान में आईसीडी के मामले में पिछड़े हैं, लेकिन राज्य के सकल मूल्यवर्धित और निर्यात में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसके अलावा, राज्य को वेयरहाउसिंग और कोल्ड स्टोरेज क्षमताओं में भी काफी वृद्धि करने की आवश्यकता है, यह देखते हुए कि राज्य से कृषि और संबद्ध गतिविधियों तथा फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों से काफी निर्यात होता है। राज्य को सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग और कॉमिक्स जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे में सुधार करने पर भी ध्यान देना चाहिए।

क्षमता निर्माण

आंध्र प्रदेश में कुल 19 भौगोलिक उपदर्शन (जीआई) है। इनमें से 3 जीआई कृषि क्षेत्र से संबंधित हैं, 2 जीआई खाद्य पदार्थ और शेष 14 जीआई हस्तशिल्प क्षेत्र से संबंधित हैं। आंध्र प्रदेश को जीआई दर्जे (स्टेट्स) वाले इन उत्पादों के लिए एक ब्रांडिंग रणनीति विकसित करने की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि जीआई ब्रांड के तहत विपणन किए गए सभी उत्पाद न्यूनतम विशिष्ट मानकों का पालन करते हैं। राज्य से अधिक उत्पादों की पहचान करने के लिए भी पहल की आवश्यकता है, जिन्हें जीआई दर्जा दिया जा सकता है। इसमें राज्य के अनूठे पाक व्यंजन शामिल हो सकते हैं जैसे कि `पूथारेकुलु' (राइस पेपर स्वीट), `काकीनाडा गोट्टम काजा', `उलवाचारू', `बंदर हलवा', `गोंगुरा पचहड़ी', `चेगोडिलु', `बोरेलु' आदि जो राज्य से इन प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के निर्यात को और बढ़ावा दे सकते हैं। साथ ही क्यूलनेरी टूरिज्म को भी बढ़ावा दे सकते हैं।

इसके अलावा, राज्य निर्यात को बढ़ावा देने के लिए वैधानिक प्रमाणपत्र/मान्यता प्राप्त करने के लिए राज्य में निर्यातकों द्वारा किए गए खर्चों को रिफंड के रूप में सहायता प्रदान करने पर विचार कर सकता है, जैसे कि दवा निर्यात को बढ़ाने के लिए डब्ल्यूएचओ–जीएमपी प्रमाणन और मेडिकल टूरिज्म के लिए संयुक्त आयोग अंतरराष्ट्रीय मान्यता।

राजकोषीय प्रोत्साहन

आंध्र प्रदेश में राजकोषीय प्रोत्साहन लागत के बोझ को कम करने और निर्यातकों की मूल्य प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के लिए रिफंड/प्रतिपूर्ति और रियायतें एक प्रमुख कदम हो सकती हैं। राज्य सरकार राज्य से प्रमुख उत्पादों के निर्यात में माल ढुलाई घटक को सब्सिडी देने के लिए माल ढुलाई सब्सिडी बढ़ाने पर विचार कर सकती है। इसमें बंदरगाह से बहुत दूर जिलों पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है। इसके अलावा, निर्माताओं, विशेष रूप से एमएसएमई को अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को प्राप्त करने और विकसित करने, प्रगति को उत्प्रेरित करने और वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करने में सहायता करने के लिए, आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा प्रौद्योगिकी अधिग्रहण सहायता भी प्रदान की जा सकती है।

निर्यात संवर्धन अभियान

आंध्र प्रदेश को अपने निर्यात संवर्धन अभियान को निरंतर आगे बढ़ाने की जरूरत है। राज्य में निर्यातकों को प्रोत्साहन और मान्यता देने के लिए प्रमुख क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों को निर्यात पुरस्कार/मान्यता प्रदान की जा सकती है। प्रमुख क्षेत्रों में कृषि एवं संबद्ध उत्पादों, समुद्री उत्पादों, खाद्य प्रसंस्करण, फार्मास्यूटिकल्स, रसायन, वस्त्र और परिधान, हथकरघा एवं हस्तशिल्प, इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी शामिल हैं। राज्य सरकार के निर्यात संवर्धन प्रयासों के तहत राज्य के विभिन्न औद्योगिक समूहों पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इस संदर्भ में, मौजूदा समूहों के आकलन के लिए एक तंत्र विकसित किया जा सकता है। क्लस्टरों के आकलन के आधार पर, राज्य सरकार द्वारा प्रासंगिक क्षमता निर्माण गतिविधियां शुरू की जा सकती हैं। इसके अलावा, राज्य सरकार द्वारा राज्य से उत्पन्न उत्पादों के लिए विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी ब्रांड बनाने के लिए एक ब्रांड इक्विटी फंड भी स्थापित किया जा सकता है।

संस्थागत सुव्यवस्थितीकरण

वर्तमान में, निर्यात संवर्धन और सुविधा के लिए राज्य के संस्थागत ढांचे में विभागों, समितियों और एजेंसियों का समूह शामिल है। आंध्र प्रदेश में समग्र संस्थागत इकोसिस्टम (पारिस्थितिकी) को इस तरह से फिर तैयार करने की आवश्यकता है जो निर्यात के लिए प्रस्तावित विभिन्न योजनाओं को सुविधाजनक बनाता हो। प्रस्तावित लक्ष्यों की नियमित तौर पर निगरानी की सुविधा देता हो। इस तरह राज्य को उच्च निर्यात की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता हो। ■

भारत–मध्य अमेरिका के बीच व्यापार और निवेश संबंध

– **विश्वनाथ जंध्याला,** *सहायक महाप्रबंधक*
अल्फिया अंसारी, *उप प्रबंधक*

यह अध्ययन मध्य अमेरिकी देशों पर केंद्रित है जिसमें बेलीज, कोस्टा रिका, अल साल्वाडोर, ग्वाटेमाला, होंडुरास, निकारागुआ, पनामा और डोमिनिकन रिपब्लिक शामिल हैं। यह सब मिलकर मध्य अमेरिकी एकीकृत प्रणाली (एसआईसीए) का गठन करते हैं। मध्य अमेरिकी देशों की जीडीपी 1980 में 35.3 बिलियन यूएस डॉलर होती थी। यह 2022 में 12 गुना अधिक बढ़कर 428.4 बिलियन यूएस डॉलर तक पहुंच गई।

मध्य अमेरिका के साथ भारत के व्यापार संबंध

सदी की शुरुआत से भारत और मध्य अमेरिका के व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। वर्ष 2001 में कुल 159.1 मिलियन यूएस डॉलर का व्यापार हुआ। यह 2021 में बढ़कर 2.9 बिलियन यूएस डॉलर तक पहुंच गया। इसी तरह 2001 में मध्य अमेरिका में भारत का निर्यात 147.4 मिलियन यूएस डॉलर का हुआ और लगातार वृद्धि के साथ, निर्यात 2014 में 1 बिलियन यूएस डॉलर के आंकड़े को पार कर गया। इसके बाद हर साल निर्यात 1 बिलियन यूएस डॉलर से अधिक रहा है। वर्ष 2021 में निर्यात 1.9 बिलियन यूएस डॉलर के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। महामारी वर्ष 2020 में लचीलापन दिखाते हुए भारत ने मध्य अमेरिका में 1.1 बिलियन यूएस डॉलर का निर्यात किया। इसी तरह, 2001 में मध्य अमेरिका से भारत का आयात 11.7 मिलियन यूएस डॉलर रहा जो 2004 में 100 मिलियन यूएस डॉलर के आंकड़े को पार कर गया। तब से, आयात में भी लगातार वृद्धि दर्ज की गई है और 2021 में व्यापारिक आयात 987.3 मिलियन यूएस डॉलर तक पहुंच गया।

मध्य अमेरिका में भारत के शीर्ष निर्यात–स्थल : वर्ष 2021 में मध्य अमेरिका में भारत का कुल व्यापारिक निर्यात 1.9 बिलियन यूएस डॉलर रहा। इस क्षेत्र में 2021 में ग्वाटेमाला 27.7% की हिस्सेदारी के साथ भारत के निर्यात के लिए सबसे बड़ा बाजार रहा। जबकि 17.8% की हिस्सेदारी के साथ पनामा एवं 16.2% की हिस्सेदारी के साथ होंडुरास और 16% की हिस्सेदारी के साथ डोमिनिकन गणराज्य 2021 में भारत के निर्यात के लिए क्रमशः दूसरे, तीसरे और चौथे निर्यात बाजार रहे।

मध्य अमेरिका से भारत के शीर्ष आयात स्त्रोत : मध्य अमेरिका से भारत का आयात 2021 में 1 बिलियन यूएस डॉलर रहा। मध्य अमेरिका से डोमिनिकन रिपब्लिक, 66.1% की हिस्सेदारी के साथ भारत के लिए आयात का सबसे बड़ा स्रोत रहा। इसी वर्ष भारत को आपूर्ति करने वाले अन्य प्रमुख देश पनामा (21.6%), कोस्टा रिका (6.4%), और होंडुरास (2.3%) रहे।

मध्य अमेरिका में भारत के शीर्ष निर्यात– उत्पाद–वार : वर्ष 2021 में मध्य अमेरिका में भारत की प्रमुख निर्यात वस्तुएं परिवहन वाहन रहे, जिनकी इस क्षेत्र के कुल निर्यात में 21.7% की लगभग 408.2 मिलियन यूएस डॉलर की हिस्सेदारी रही। भारत की अन्य प्रमुख निर्यात श्रेणियां– फार्मास्यूटिकल उत्पाद (2021 में कुल निर्यात का 13.2%), कपास (8.6%), खनिज ईंधन और तेल (6.4%), टैनिंग या डाइंग एक्स्ट्रैक्ट (5.9%) और मशीनरी एवं यांत्रिक उपकरण (4%) रहीं।

मध्य अमेरिका से भारत का शीर्ष आयात– उत्पाद–वार : वर्ष 2021 में, इस क्षेत्र से भारत के कुल आयात में प्राकृतिक या परिष्कृत मोती, कीमती या अर्धकीमती पत्थर की हिस्सेदारी 62.3% रही। इसी वर्ष अन्य प्रमुख आयात उत्पाद में अयस्क, स्लैग और ऐश (16.3%), लकड़ी और लकड़ी के उत्पाद (9.4%), लोहा एवं इस्पात (4.2%), लकड़ी का गूदा (2.3%) और मशीनरी एवं यांत्रिक उपकरण शामिल थे।

मध्य अमेरिकी देशों में निवेश परिदृश्य

वर्ष 2020 में, कोविड–19 से संबंधित आर्थिक संकट की वजह से इस क्षेत्र में एफडीआई प्रवाह लगभग 7.4 बिलियन यूएस डॉलर तक कम हो गया। यह वित्तीय संकट के बाद सबसे कम मूल्य है। एफडीआई में 2021 में फिर तेजी आई और कुल प्रवाह 2020 से लगभग दोगुना होकर 14 बिलियन यूएस डॉलर तक पहुंच गया।

एफडीआई प्रवाह– शीर्ष देश : वर्ष 2021 में, ग्वाटेमाला, कोस्टा रिका और डोमिनिकन रिपब्लिक इस क्षेत्र में सर्वाधिक एफडीआई आकर्षित करने वाले देश रहे। वहीं 2020 में, पनामा को अपने एफडीआई प्रवाह में सबसे अधिक नुकसान उठाना पड़ा और 2019 के 4,062 मिलियन यूएस डॉलर से घटकर 2020 में 606.7 मिलियन यूएस डॉलर हो गया। यह कोविड–19 महामारी की वजह से हुआ।

एफडीआई प्रवाह– शीर्ष क्षेत्र : जनवरी 2013 से दिसंबर 2022 के दौरान, इस क्षेत्र में कुल एफडीआई प्रवाह का 38.4% व्यापार सेवा क्षेत्र को मिला। इसके बाद 11% निवेश होटल और पर्यटन द्वारा, 10.8% नवीकरणीय ऊर्जा द्वारा, 7.4% धातुओं द्वारा, 6.3% परिवहन एवं भंडारण द्वारा और 5.7% संचार द्वारा प्राप्त किया गया।

मध्य अमेरिका में सर्वाधिक निवेश करने वाले देश : जनवरी 2013 से दिसंबर 2023 की अवधि के दौरान हांगकांग मध्य अमेरिका में सर्वाधिक निवेश करने वाला देश रहा। उसकी इस क्षेत्र में कुल प्रवाह में 37.3% हिस्सेदारी रही। हांगकांग के बाद अमेरिका (इसी अवधि के दौरान कुल एफडीआई प्रवाह में 19.7% हिस्सेदारी), कनाडा (8.5%), स्पेन (6.2%) और मैक्सिको (3%) का स्थान रहा। इसी अवधि के दौरान मध्य अमेरिका में भारत का निवेश 48.5 मिलियन यूएस डॉलर हुआ, जो इस क्षेत्र के कुल निवेश प्रवाह का महज 0.04% रहा। इसके साथ, भारत इस क्षेत्र में 46वां सबसे बड़ा निवेशक बना।

मध्य अमेरिका में भारतीय निवेश

भारत के केंद्रीय बैंक यानी भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल 1996 से मार्च 2023 के दौरान मध्य अमेरिका में भारत का निवेश 2.7 बिलियन यूएस डॉलर रहा। यह निवेश पनामा केंद्रित था।

शीर्ष क्षेत्र : अप्रैल 2010 से मार्च 2023 के दौरान, मध्य अमेरिका में भारत का 77.8% निवेश कृषि और खनन क्षेत्र में है। इसके बाद परिवहन, भंडारण और संचार सेवाओं में 11.5%, विनिर्माण में 9.6% है।

मध्य अमेरिकी देशों में निवेश के अवसर

मध्य अमेरिकी देशों में भारतीय निवेश की अपार संभावनाएं हैं। इन देशों में निवेश के लिए संभावित क्षेत्रों को उनकी संबंधित निवेश संवर्धन एजेंसियों द्वारा रेखांकित किया जाता है। प्रमुख क्षेत्र जो निवेश के अवसर प्रदान करते हैं, उनमें कृषि व्यवसाय, कृषि उद्योग, मत्स्य पालन, पर्यटन और आतिथ्य, लाइट मैन्युफैक्चरिंग एवं उत्पादन, प्रौद्योगिकी और सेवाएं, ऊर्जा एवं प्राकृतिक संसाधन, रचनात्मक एवं मनोरंजन उद्योग, रियल एस्टेट एवं कंस्ट्रक्शन, स्वास्थ्य देखभाल और फार्मास्यूटिकल्स, व्यावसायिक सेवाएं एवं वैमानिकी शामिल हैं।

लैटिन अमेरिका और कैरेबियन क्षेत्र में भारतीय निर्यात–आयात बैंक की गतिविधियां

भारत सरकार की ओर निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप, लैटिन अमेरिका और कैरेबियन (एलएसी) क्षेत्र इंडिया एक्ज़िम बैंक के लिए प्रमुख क्षेत्र रहा है। इसलिए दो–तरफा व्यापार एवं निवेश प्रवाह को बढ़ावा देने तथा समर्थन करने की इसकी रणनीति का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। एलएसी क्षेत्र के साथ संबंध बनाने के प्रति इंडिया एक्ज़िम बैंक की वचनबद्धता उन विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों में परिलक्षित होती है, जिन्हें इंडिया एक्ज़िम बैंक ने शुरू किया है। इंडिया एक्ज़िम बैंक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है और विभिन्न क्षेत्रों एवं विशेष रूप से एलएसी क्षेत्र में देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा देने में भारत सरकार की पहल का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है।

इंडिया एक्ज़िम बैंक का वॉशिंगटन डी.सी में एक प्रतिनिधि कार्यालय है, जो इस क्षेत्र के साथ आर्थिक सहयोग को सुविधाजनक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बैंक की कई पहलों के साथ भी यह करीब से जुड़ा हुआ है। प्रतिनिधि कार्यालय इंटर–अमेरिकन डेवलपमेंट बैंक (आईडीबी), वॉशिंगटन डी.सी.; बैंको नेशनल डी डेसेनवोलविमेंटो इकोनॉमिको ई सोशल (बीएनडीईएस), कॉरपोरेशन एंडिना डी फोमेंटो (सीएएफ), वेनेजुएला; बैंको डी इनवर्जन वाई कॉमर्सियो एक्सटीरियर एस.ए. (बीआईसीआई), अर्जेंटीना; सेंट्रल अमेरिकन बैंक फॉर इकोनॉमिक इंटीग्रेशन (सीएबीईआई/बीसीआईई), होंडुरास; कैरेबियन एसोसिएसन ऑफ इंडस्ट्री एंड कॉमर्स, त्रिनिदाद एंड टोबैगो; बैंको मर्केंटिल (बैंको यूनिवर्सल) सी.ए, वेनेजुएला जैसे संस्थानों के साथ इंटरफेस करता है। साथ ही इस क्षेत्र में भारतीय मिशन भी शामिल है।

एलएसी क्षेत्र में इंडिया एक्ज़िम बैंक का वित्तपोषण और कार्यक्रम

ऋण व्यवस्थाएं : 31 मार्च 2023 तक, एलएसी क्षेत्र में ऑपरेटिव एलओसी की कुल संख्या 32 रही, जो 6 देशों अर्थात् बोलीविया, क्यूबा, गुयाना, होंडुरास, निकारागुआ और सूरीनाम में मल्टी–स्पेशियलिटी अस्पतालों की स्थापना, सिंचाई, मशीनरी और उपकरणों के निर्यात जैसी परियोजनाओं को सहायता प्रदान करने के लिए विस्तारित की गईं। इनकी राशि 801.7 मिलियन यूएस डॉलर रही।

विदेशी निवेश वित्त : 31 मार्च 2023 तक, इंडिया एक्ज़िम बैंक ने अपने विदेशी निवेश वित्त कार्यक्रम के माध्यम से एलएसी में सात देशों अर्थात् ब्राजील, ब्रिटिश वर्जिन द्वीप समूह, केमैन द्वीप, मैक्सिको, चिली, ग्वाटेमाला, पनामा में 4,925 करोड़ रुपये की कुल स्वीकृत राशि के साथ भारतीय कंपनियों द्वारा स्थापित 34 ऐसे उद्यमों को सहायता दी है।

परियोजना निर्यात का वित्तपोषण : अपनी परियोजना निर्यात सहायता के तहत, इंडिया एक्ज़िम बैंक अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में विदेशी टर्नकी परियोजनाओं, सिविल कंस्ट्रक्शन, आपूर्ति के साथ–साथ तकनीकी एवं परामर्श सेवा अनुबंधों के लिए वित्त पोषित और गैर–वित्त पोषित दोनों सुविधाएं प्रदान करता है। राष्ट्रीय निर्यात बीमा खाता (एनईआईए) कार्यक्रम के तहत अपने क्रेता ऋण के माध्यम से, इंडिया एक्ज़िम बैंक आस्थगित ऋण शर्तों पर भारत से वस्तुओं और सेवाओं के आयात के लिए विदेशी संप्रभु सरकारों एवं सरकारी स्वामित्व वाली संस्थाओं को ऋण सुविधा प्रदान करके भारत से परियोजना निर्यात की सुविधा प्रदान करता है। भारतीय निर्यातक शिपिंग दस्तावेजों के एवज में, इंडिया एक्ज़िम बैंक की प्रक्रियागत औपचारिकताओं में गए बिना, उनसे पात्र मूल्य का भुगतान प्राप्त कर सकते हैं।

परामर्श कार्य : इंडिया एक्ज़िम बैंक को 2022–23 में, एक्सपोर्ट बारबाडोस द्वारा बारबाडोस में एक एक्सपोर्ट क्रेडिट एजेंसी (ईसीए) स्थापित करने के लिए परामर्श कार्य सौंपा गया था। बारबाडोस सरकार का लक्ष्य देश में निर्यात के लिए एक सक्षम वातावरण के विकास माध्यम से 2030 तक निर्यात को 1 बिलियन यूएस डॉलर तक बढ़ाना है। इस उद्देश्य के अनुरूप, बारबाडोस सरकार की एक एजेंसी एक्सपोर्ट बारबाडोस, औद्योगिक एवं निर्यात विकास को बढ़ावा देने और सुविधाजनक बनाने की जिम्मेदारी के साथ, बारबाडोस में ईसीए के लिए एक प्रतिष्ठान/व्यवसाय योजना विकसित करना चाहती है। एक्सपोर्ट बारबाडोस द्वारा इंडिया एक्ज़िम बैंक से बारबाडोस में ईसीए की स्थापना का मार्गदर्शन करने के लिए परामर्श सेवाएं मांगी गई।

आगे की राह

भारत और मध्य अमेरिकी देश एक–दूसरे के बीच मौजूदा साझेदारी का पारस्परिक लाभ उठा रहे हैं। हालांकि, दीर्घकाल में भारत–मध्य अमेरिका संबंधों को और मजबूत बनाने के लिए, भारत–मध्य अमेरिका तालमेल के लिए नए कारकों एवं भविष्य में सहयोग के व्यापक अवसरों की पहचान करना आवश्यक है। द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने में कुछ नीतिगत उत्प्रेरक मदद कर सकते हैं। इनमें ये शामिल हो सकते हैं- (i) निर्यात क्षमता और आयात मांग रखने वाली वस्तुओं पर आधारित व्यापार का विस्तार (ii) मध्य अमेरिका के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) या आर्थिक साझेदारी समझौते का विस्तार और संभावनाएं (iii) परिवहन और व्यापार संबंधी लॉजिस्टिक्स में सुधार (iv) उद्योग की भागीदारी में वृद्धि (v) बेहतर कनेक्टिविटी के माध्यम से लोगों के बीच संवाद को बढ़ाना। ■

असम की निर्यात संभावनाओं का लाभ उठाना

– **राहुल मजूमदार,** *सहायक महाप्रबंधक*
साक्षी गर्ग, *उपप्रबंधक*

चारों ओर भूमि से घिरे होने के बावजूद, असम को पड़ोसी देशों के साथ निकटता और पूर्वोत्तर भारत के प्रवेश द्वार के रूप में रणनीतिक लाभ मिलता है। असम का यह स्थैतिक लाभ इसकी आर्थिक क्षमता के साथ मिलकर इसे भारत की एक्ट ईस्ट नीति एवं बहु–क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) जैसे क्षेत्रीय कार्यक्रमों में एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बनाता है।

स्थिर कीमतों पर 2021–22 में 2.7 ट्रिलियन के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) के साथ असम पूर्वोत्तर क्षेत्र (एनईआर) में सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। यह पिछले वर्ष की तुलना में 9.1% की वृद्धि को दर्शाता है। हालांकि, इसकी प्रतिव्यक्ति जीएसडीपी राष्ट्रीय औसत सहित कई अन्य पूर्वोत्तर राज्यों से पीछे है। यद्यपि असम की लगभग 70% आबादी कृषि में लगी हुई है, सकल राज्य मूल्यवर्धित (जीएसवीए) में इस क्षेत्र की हिस्सेदारी घट रही है। यह उद्योग और सेवाओं में श्रमिकों के प्रवास की आवश्यकता को दर्शाता है। असम में अब तक औद्योगिक आधार कम रहा है। यह चाय, पेट्रोलियम रिफाइनिंग, जूट, वस्त्र, सीमेंट और रबर जैसे कुछ क्षेत्रों में ही केंद्रित है। जबकि जीएसवीए में सबसे अधिक योगदान देने वाले सेवा क्षेत्र में लोक प्रशासन, रक्षा और अन्य सेवाओं एवं व्यापार, होटल, परिवहन और संचार सेवाएं अग्रणी है।

असम के मर्चेंडाइज निर्यात की सरंचना (2021–22)

देश के सभी राज्यों में, असम 2021–22 में भारत के मर्चेंडाइज निर्यात में 0.1% की हिस्सेदारी के साथ निर्यात के मामले में 25वें स्थान पर रहा। वर्ष 2021–22 में 450 मिलियन यूएस डॉलर के साथ, इसके निर्यात में 8.4% की वार्षिक वृद्धि देखने को मिली। असम के निर्यात समूह अत्यधिक संकेंद्रित है। इसमें चाय सबसे महत्त्वपूर्ण निर्यात वस्तु है और इसकी कुल निर्यात में आधी हिस्सेदारी है। हालांकि, मूल्य के संदर्भ में, चाय का निर्यात 2019–20 के 312.5 मिलियन यूएस डॉलर से घटकर 2021–22 में 227.1 मिलियन यूएस डॉलर हो गया है। परिणामस्वरूप, इस अवधि के दौरान भारत के चाय के कुल निर्यात में असम की हिस्सेदारी में 36% से घटकर उल्लेखनीय रूप से 31% तक हो गई है।

व्यापार सुगमता के मामले में असम का प्रदर्शन मिला–जुला रहा है। नीति आयोग के तत्परता सूचकांक, 2021 में, भूमि से घिरे 10 राज्यों में से असम 7वें और सभी 36 राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में 15वें स्थान पर है। हालांकि, एनसीएईआर के राज्य निवेश क्षमता सूचकांक 2018 में, असम निवेश के लिए सबसे कम अनुकूल राज्यों में से एक है। यानी 21 राज्यों में से इसे 19वां स्थान दिया गया।

व्यापार में प्रमुख बाधाओं में, बिजली तक पहुंच की सुविधा न होना, अपर्याप्त बैंकिंग सुविधाएं और औद्योगिक उद्देश्य के लिए भूमि, शामिल है। अमीनगांव में अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (आईसीडी) का कम उपयोग भी एक मुद्दा है। जबकि व्यापार में सहायक के रूप में पूर्वोत्तर में यह मौजूदा एकमात्र आईसीडी है। व्यापार की उच्च संभावना होने के बावजूद सीमा व्यापार बुनियादी ढांचे का भी पूरी तरह से लाभ नहीं उठाया जा रहा है।

असम के मर्चेंडाइज निर्यात की संरचना (2021–22)

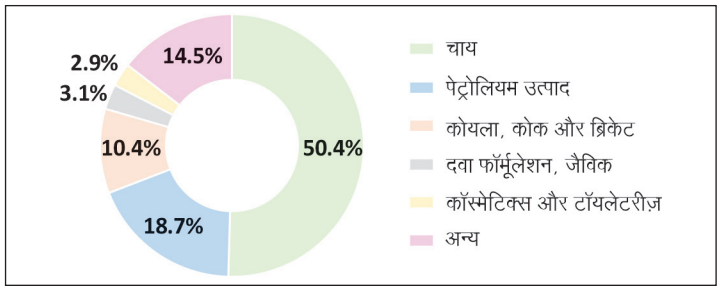

असम के निर्यात को बढ़ाने के लिए संभावित रणनीतियां

असम में निर्यात क्षमताओं का निर्माण बहुत महत्त्वपूर्ण है। राज्य में सकारात्मक परिदृश्य के तहत 2024–25 तक 710.3 मिलियन यूएस डॉलर के निर्यात का लक्ष्य निर्धारित करने की क्षमता है। इसे प्राप्त करने के लिए कई रणनीतियां प्रस्तावित हैं।

पहली- भौगोलिक उपदर्शन (जीआई) वाले उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एक मजबूत आईपी सुरक्षा तंत्र के साथ–साथ प्रभावी ब्रांडिंग रणनीतियों को तैयार करने की आवश्यकता है। दूसरी- असम को चाय किसानों के बीच क्षमता निर्माण की पहल, पूर्वोत्तर से चाय निर्यात के एग्रीगेटर के रूप में कार्य और ऊलोंग, व्हाइट, ग्रीन, पर्पल टी जैसी प्रीमियम चाय किस्मों के लिए संसाधन समर्पित करके चाय उत्पादन के मामले में वैश्विक अगुआ के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को फिर हासिल करने की आवश्यकता है। तीसरी- असम को आईटी और बीपीओ क्लस्टरों के लिए पर्याप्त बुनियादी ढांचा स्थापित करके, अधिक स्पेशियलिटी अस्पतालों का निर्माण करके, एक मेडिकल टूरिज्म डिपार्टमेंट स्थापित करके और पर्यटकों के लिए सेवा वितरण को मानकीकृत करके एक सेवा केंद्र के रूप में उभरने की आवश्यकता है। असम में चावल की समृद्ध विविधता पाई जाती है- जैसे `बोका चौल', जोहा चावल, चौवा चावल, लाल चावल आदि। अनुसंधान एवं विकास, विपणन और क्षमता निर्माण पहल के माध्यम से उनके निर्यात में वृद्धि की संभावना बनाई जा सकती है।

कनेक्टिविटी की बात करें, तो असम का करीमगंज जिला मल्टी–मॉडल परिवहन के माध्यम से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। आसपास के क्षेत्र में ऑटो–पार्ट्स, सीमेंट, खाद्य प्रसंस्करण आदि जैसे उद्योगों की स्थापना और कर छूट, कॉमन वेयरहाउसिंग, कोल्ड स्टोरेज आदि जैसे प्रोत्साहन प्रदान करने से करीमगंज को निर्यात केंद्र के रूप में विकसित करने में मदद मिल सकती है। आईसीडी वर्तमान में मुख्य रूप से चाय निर्यात को पूरा करता है और पूर्ण कंटेनर लोड से संबंधित है, जो मुख्य रूप से इसे छोटे निर्यातकों के लिए दुर्गम्य बनाता है। लिहाजा, केंद्र और राज्य सरकार दो–तरफा यातायात के जरिए असम व कोलकाता के बीच मूल्य–श्रृंखला लिंकेज और आईसीडी से बांग्लादेश के साथ सीमा पार माल ढुलाई एवं ट्रांसशिपमेंट सेवाएं शुरू करने की संभावनाओं को तलाश सकती है।

राज्य की व्यापार प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने से पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र के बेहतर सामाजिक–आर्थिक विकास में मदद मिलेगी और भारत के विकास में भी योगदान होगा। ■

इंडिया एक्ज़िम बैंक की ऋण–व्यवस्थाएँ

सौजन्य : **लाइन्स ऑफ क्रेडिट ग्रुप**

इंडिया एक्ज़िम बैंक विदेशी वित्तीय संस्थानों, क्षेत्रीय विकास बैंकों, संप्रभु सरकारों और विदेशों की अन्य संस्थाओं को ऋण–सहायता (एलओसी) प्रदान करता है। ताकि उन देशों के खरीदार भारत से विकासात्मक और अवसंरचनात्मक परियोजनाओं, उपकरणों, वस्तुओं और सेवाओं का आयात कर सकें। भारत सरकार के सहयोग से प्रदान की गई ऋण व्यवस्था के तहत, इंडिया एक्ज़िम बैंक भारतीय निर्यातकों को अनुबंध मूल्य की 100% प्रतिपूर्ति करता है। इसमें कुल अनुबंध मूल्य की कम से कम 75% वस्तुएं और सेवाएं भारत से ली जानी चाहिए। ऋण–व्यवस्थाओं ने भारत को उभरते बाजारों में परियोजना निष्पादन क्षमताओं का प्रदर्शन करने में सक्षम बनाया है। ऋण–व्यवस्थाओं ने हाल के वर्षों में, विशेष रूप से अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, ओशिनिया और सीआईएस के विकासशील देशों में काफी गति हासिल करने में मदद की है। ऋण–व्यवस्थाओं ने भारत के राजनीतिक, रणनीतिक और वाणिज्यिक हितों को बढ़ावा देने के अलावा लाभार्थी देशों में भारत के लिए अपेक्षित राजनीतिक सद्भाव बनाने में मदद की है। ऋण-व्यवस्था भारत की बढ़ती आर्थिक ताकत के साथ–साथ प्राप्तकर्ता विकासशील देशों में बुनियादी ढांचे के विकास और क्षमता निर्माण में योगदान करने की इच्छा को प्रदर्शित करने में मदद करती है। ऋण व्यवस्थाएं प्राप्तकर्ता देश के बाजारों में आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात में भी मदद करती है, जिसमें भारत की उपस्थिति नहीं है। भारतीय निर्यातकों को खरीदार या खरीदार देश को बिना जोखिम के इंडिया एक्ज़िम बैंक के माध्यम से माल की ढुलाई का पूरा भुगतान मिलता है।

ऋण व्यवस्थाओं को संप्रभु सरकारों या उनकी नामित एजेंसियों तक विस्तार दिया गया है, ताकि उन देशों में खरीदारों को विलंबित ऋण शर्तों पर भारत से वस्तुएं और सेवाएं आयात करने में सक्षम बनाया जा सके। बैंक के पास 23 जून 2023 तक 272 लाइन्स ऑफ क्रेडिट हैं जो अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, ओशिनिया और सीआईएस में 62 से अधिक देशों को कवर करती हैं। इसमें 27.99 बिलियन यूएस डॉलर से अधिक की ऋण प्रतिबद्धताएं हैं, जो भारत के निर्यात के वित्तपोषण के लिए उपलब्ध हैं। इस प्रकार ऋण-व्यवस्थाएं भारत की परियोजनाओं, वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देने और सुविधा प्रदान करने के लिए प्रभावी माध्यम है।

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें–

श्री दीपक कुजूर
सहायक महाप्रबंधक
भारतीय निर्यात–आयात बैंक
ऑफिस ब्लॉक, टॉवर–1, 7वीं मंजिल, एड्जेसेंट रिंग रोड
किदवई नगर (पूर्व), नई दिल्ली–110023
फोन–(011) 24607700
ई–मेलः eximloc@eximbankindia.in

दास्तान–ए–कामयाबी

नेपाल सरकार को इंडिया एक्ज़िम बैंक की भारत सरकार समर्थित 250 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण–व्यवस्था

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने नेपाल सरकार को भारत सरकार समर्थित 250 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था प्रदान की है। यह ऋण-व्यवस्था राजमार्गों, हवाई अड्डों, पुलों और सिंचाई परियोजनाओं जैसी बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए प्रदान की गई है। इस संबंध में ऋण करार पर 21 अक्टूबर, 2011 को हस्ताक्षर किए गए थे।

परियोजना विवरण :

करार पर (i) कल्पतरु पावर ट्रांसमिशन लिमिटेड (केपीटीएल) और नेपाल विद्युत प्राधिकरण, नेपाल सरकार तथा (ii) हिताची एनर्जी इंडिया लिमिटेड (पूर्व में एबीबी इंडिया लिमिटेड) और नेपाल विद्युत प्राधिकरण, नेपाल सरकार के बीच हस्ताक्षर किए गए थे; जिन्हें 23 मई, 2018 को ऋण-व्यवस्था में शामिल किया गया।

परियोजना के कार्यक्षेत्र में प्लांट के डिज़ाइन का प्रोक्योरमेंट, आपूर्ति और लाहा चौक 132 केवी के सबस्टेशन, न्यू मोडी 132 केवी स्विचिंग स्टेशन और लेखनाथ सबस्टेशन पर 132 केवी लाइन बे के विस्तार के कार्य शामिल रहे।

परियोजना की कुल लागत **20.39 मिलियन यूएस डॉलर** रही।

परियोजना 08 मई, 2023 को सफलतापूर्वक पूरी हो गई। ■

बीती तिमाही की गतिविधियां

सौजन्य : **कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन ग्रुप**

श्री तरुण शर्मा ने इंडिया एक्ज़िम बैंक के उप प्रबंध निदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया

श्री तरुण शर्मा ने 18 अप्रैल, 2023 से इंडिया एक्ज़िम बैंक के उप प्रबंध निदेशक (डीएमडी) के रूप में कार्यभार ग्रहण कर लिया है। इससे पहले, वह बैंक के मुख्य वित्तीय अधिकारी (सीएफओ) के रूप में कार्यरत थे और बैंक की प्रौद्योगिकी पहलों का नेतृत्व कर रहे थे। उन्हें व्यापार, प्रतिस्पर्धात्मकता, उद्योग और इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास तथा नीति संबंधी विषयों सहित हाल ही में निरूपित की गई नई व्यापार सुगमीकरण पहल, नामतः, `व्यापार सहायता कार्यक्रम' (टैप) जैसे क्षेत्रों में दो दशक से अधिक का वैश्विक अनुभव है। इस पहल के जरिए अंतरराष्ट्रीय व्यापार ट्रांज़ैक्शन को सहयोग के लिए वाणिज्यिक बैंकों की क्षमता बढ़ाने हेतु व्यापार लिखतों (ट्रेड इंस्ट्रूमेंट्स) की ऋण सीमा बढ़ाने के रूप में सहायता प्रदान की जाती है। श्री शर्मा मार्च 2022 से ब्रिक्स वित्तीय सेवाएं कार्य समूह, भारत चैप्टर के अध्यक्ष हैं और इससे पहले एसएमई सहयोग संबंधी टास्क फोर्स का भी नेतृत्व कर चुके हैं।

वित्तीय वर्ष 2023 में दोगुना हुआ इंडिया एक्ज़िम बैंक का लाभ

इंडिया एक्ज़िम बैंक की प्रबंध निदेशक सुश्री हर्षा बंगारी और उप प्रबंध निदेशक- श्री एन. रमेश और श्री तरुण शर्मा ने शुक्रवार, 12 मई, 2023 को मुंबई में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए बैंक के वित्तीय परिणामों की घोषणा की। वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए बैंक के वित्तीय परिणामों की खास बातें निम्नलिखित अनुसार हैं:

वित्तीय कार्य निष्पादन

मानदंड (ए – जे ₹ करोड़ में, के – एम% में)	2021-22 में निष्पादन	2022-23 में निष्पादन	2021-22 से वृद्धि
ए. निवल ऋण पोर्टफोलियो	1,17,619	1,34,523	14.37%
बी. गैर-निधिक पोर्टफोलियो	15,247	17,000	11.50%
सी. ग्राहक आस्ति पोर्टफोलियो (ए+बी)	1,32,866	1,51,523	14.04%
डी. निवल निवेश	10,903	12,311	12.91%
ई. कुल उधारियां	1,07,477	1,28,423	19.49%
एफ. कुल व्यवसाय (सी+डी+ई)	2,51,246	2,92,257	16.32%
जी. प्रति कर्मचारी व्यवसाय	737	814	10.45%
एच. परिचालन लाभ	3,130	3,599	14.98%
आई. कर पूर्व लाभ	2,150	2,089	(2.84) %
जे. कर पश्चात लाभ	738	1,556	110.84%
के. निवल अनर्जक आस्तियां	-	0.71%	-
एल. जोखिम भारित पूंजी आस्ति अनुपात	30.49%	25.43%	(506) bps
एम. प्रावधान कवरेज अनुपात	100%	94.56%	(544) bps

एक्ज़िम बैंक के सहयोग से दुनिया चखेगी बिहार की जीआई टैग वाली शाही लीची का स्वाद

भारतीय निर्यात-आयात बैंक (एक्ज़िम बैंक) ने बिहार के मुजफ्फरपुर के शाही लीची किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान की है। बैंक ने लीची ग्रोअर्स एसोसिएशन ऑफ बिहार, मुजफ्फरपुर को वित्तीय अनुदान के जरिए क्षमता विकास के लिए यह सहयोग दिया है। `फलों की रानी' कही जाने वाली शाही लीची बिहार में होने वाली लीची की उन्नत और महंगी किस्म है। इसे 2018 में भौगोलिक उपदर्शन (जीआई) टैग मिला था। बिहार में शाही लीची मुख्य रूप से मुजफ्फरपुर जिले में होती है। यही वजह है कि इसे `लीची की राजधानी' भी कहा जाता है। यहां की उपजाऊ मिट्टी और अनुकूल जलवायु इस फल को खास रंगत और स्वाद देती है। भारत विश्व में लीची का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और यहां की शाही लीची मीठे गूदे से भरे अपने अनूठे स्वाद, बड़े आकार और गहरे लाल रंग के लिए जानी जाती है। माना जाता है कि शाही लीची दुनिया में लीची की बेहतरीन किस्मों में से एक है।

भारत और मध्य अमेरिका के बीच व्यापार और निवेश संबंधों को बढ़ाने पर इंडिया एक्ज़िम बैंक के प्रकाशन का विमोचन

होंडुरास के सैन पेड्रो सुला में आयोजित हुई विकास वित्त संस्थाओं के लैटिन अमेरिकी संघ (एलीडे) की 53वीं महासभा की बैठक के दौरान 31 मई, 2023 को इंडिया एक्ज़िम बैंक के `भारत और मध्य अमेरिका के बीच व्यापार और निवेश संबंध बढ़ाना' शीर्षक वाले शोध अध्ययन का विमोचन किया गया। इसका विमोचन लुइस एंटोनियो रामिरेज़, अध्यक्ष, एलीडे (दाएं) और श्री एडविन अराक, अध्यक्ष, बान्प्रोवी (बाएं) द्वारा जारी किया गया। इस दौरान इंडिया एक्ज़िम बैंक के वॉशिंगटन डीसी कार्यालय के निवासी प्रतिनिधि श्री रवींद्र मेहरू भी उपस्थित रहे।

इंडिया एक्ज़िम बैंक का पूर्वानुमान, वित्तीय वर्ष 2024 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में 111.7 बिलियन यूएस डॉलर का रहेगा भारत का मर्चैंडाइज़ निर्यात और 86.6 बिलियन यूएस डॉलर का रहेगा गैर-तेल निर्यात

भारतीय निर्यात-आयात बैंक (इंडिया एक्ज़िम बैंक) ने वित्तीय वर्ष 2024 की पहली तिमाही के लिए भारत के निर्यात पूर्वानुमान जारी कर दिए हैं। वित्तीय वर्ष 2024 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में, भारत के कुल मर्चैंडाइज़ निर्यात 111.7 बिलियन यूएस डॉलर और गैर-तेल निर्यात 86.6 बिलियन यूएस डॉलर का रहने का पूर्वानुमान है। भारत के निर्यात, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं सहित चुनिंदा प्रमुख व्यापार साझेदारों में जारी मंदी, वैश्विक वित्तीय क्षेत्र संबंधी दबाव, सख्त वैश्विक मौद्रिक और वित्तीय स्थिति की वजह बनने वाले उच्च मुद्रास्फीति दबावों और रूस-यूक्रेन संघर्ष में जारी अनिश्चितता के अध्यधीन हैं।

भारत और अफ्रीका के बीच सहयोग का नया स्तंभ : हरित अर्थव्यवस्था

भारत-अफ्रीका विकास भागीदारी पर 14, जून, 2023 को नई दिल्ली में 18वें सीआईआई-एक्ज़िम बैंक कॉन्क्लेव का आगाज़ हुआ। इसका उद्घाटन माननीय विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने किया। उन्होंने इंडिया एक्ज़िम बैंक के दो शोध प्रकाशनों का विमोचन किया। ये शोध प्रकाशन `हरित पहलों के जरिए भारत-अफ्रीका की संपोषी भागीदारी को बढ़ाना' और `अफ्रीका में भारतीय निवेश संभावनाएं' शीर्षक से किए गए हैं। इस अवसर पर ज़िम्बाब्वे के माननीय उप राष्ट्रपति, जनरल (सेवानिवृत्त) डॉ. सीजीडीएन चिवेंगा, लोकतांत्रिक गणराज्य कोंगो के माननीय उप प्रधानमंत्री और राष्ट्रीय अर्थशास्त्र मंत्री श्री वाइटल कैमर्ही ला कानीगिन्यी और उद्योग जगत के प्रतिनिधियों सहित इंडिया एक्ज़िम बैंक की प्रबंध निदेशक सुश्री हर्षा बंगारी उपस्थित रहीं। ■

देशों का अवलोकन

सौजन्य: **रिसर्च एंड एनालिसिस ग्रुप**

यूनाइटेड किंगडम

बढ़ती मुद्रास्फीति, आपूर्ति–श्रृंखला में व्यवधान, वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि, ब्रेक्जिट के बाद व्यापार संघर्ष और घरेलू कर वृद्धि यूनाइटेड किंगडम (यूके) की आर्थिक वृद्धि को प्रभावित कर रही है। ब्रेक्जिट के बाद नई व्यापार संबंधी बाधाओं ने पश्चिमी यूरोप के देशों को प्रभावित करने वाले आपूर्ति उतार–चढ़ाव को बढ़ा दिया है। इससे यूके विशेष रूप से व्यापार संबंधी व्यवधान के प्रति संवेदनशील हो गया है। हालांकि, अर्थव्यवस्था अब तक तकनीकी मंदी (नकारात्मक वास्तविक वृद्धि की लगातार दो तिमाहियों) की स्थिति में जाने से बची हुई है और 2023 में 0.4% की वद्धि होने की उम्मीद है, जो 2022 की 4.1% से कम है। मंदी की स्थिति से वेतन वृद्धि में कमी आने और उपभोक्ता खर्च में बाधा आने की आशंका है। इससे मुद्रास्फीति 2023 में औसतन 6.2% तक धीमी हो सकती है, जो 2022 में 7.9% रही। फेड और बीओई के बीच ब्याज दर अंतर कम होने के कारण स्टर्लिंग पाउंड के 2023 में यूएस डॉलर के मुकाबले मामूली वृद्धि के साथ 1.25 यूएस डॉलर्:1 पर पहुंचने की उम्मीद है, जो 2022 में 1.24 यूएस डॉलरः £1 रहा। यूके में 1985 से लगातार चालू खाता घाटा रहा है। पहले से ही उच्च चालू खाता घाटा 2022 के 3.9% से कम होकर 2023 में सकल घरेलू उत्पाद का 3.3% होने की उम्मीद है जो काफी हद तक कम आयातित ऊर्जा लागत को दर्शाता है।

बांग्लादेश

बांग्लादेश की वास्तविक जीडीपी वृद्धि 2023 में कम होकर 5.5% होने की आशंका है, जो 2022 में 7.1% रही क्योंकि बिजली की कमी के दौरान एनर्जी राशनिंग इस वित्तीय वर्ष की पहली छमाही में आर्थिक गतिविधि को प्रभावित करेगी। कुछ बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं को कम करने के सरकार के फैसले से सार्वजनिक क्षेत्र के निवेश के प्रभावित होने की आशंका है। इसके परिणामस्वरूप कच्चे माल और पूंजीगत मशीनरी की मांग कम हो गई है। रोजगार के अवसर भी कम हो गए हैं। उपभोक्ता कीमतें 2023 में 6.3% तक बढ़ने की उम्मीद है, जो आंशिक रूप से वैश्विक तेल की उच्च कीमतों के दूसरे दौर के प्रभावों से प्रेरित है। इसके अतिरिक्त, वैश्विक उर्वरक की कमी के कारण फसल की कम पैदावार स्थानीय खाद्य कीमतों को बढ़ाती है। अमेरिका में उच्च नीतिगत दरों, बढ़ी हुई स्थानीय मुद्रास्फीति और चालू खाते में कमी के कारण प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले बांग्लादेश की मुद्रा टका के कमजोर होने की आशंका है। परिणामस्वरूप, 2023 में बांग्लादेशी टका के औसतन टका 102 : 1 यूएस डॉलर तक अवमूल्यन होने की आशंका है। चालू खाते के घाटे में रहने का अनुमान है, क्योंकि देश की अपने निर्यात–उन्मुख रेडीमेड गारमेंट उप–क्षेत्र और निर्माण गतिविधि हेतु पूंजीगत मशीनरी दोनों के लिए आयातित इनपुट पर भारी निर्भरता है। परिणामस्वरूप, चालू खाता घाटा 2022 के सकल घरेलू उत्पाद के 3.1% के बराबर से बढ़कर 2024 में सकल घरेलू उत्पाद के 3.2% तक बढ़ने की उम्मीद है।

संयुक्त अरब अमीरात

संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की वास्तविक जीडीपी वृद्धि 2022 के 7.3% की तुलना में 2023 में घटकर 4.3% तक रहने की आशंका है। लेकिन विशेष रूप से गैर–तेल उद्योगों में मजबूत बनी रहेगी क्योंकि विशेष रूप से दुबई में तेजी से प्रगति हो रही है। संयुक्त अरब अमीरात में तेल उत्पादन वृद्धि काफी कम हो सकती है, हालांकि उत्पादन ओपेकऋकोटा स्तर से थोड़ा ऊपर रह सकता है। पर्यटन, रियल एस्टेट और निर्माण में वृद्धि जारी रहने की संभावना है और एशिया एवं अफ्रीका में तेजी से बढ़ती विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के साथ एफटीए पर हस्ताक्षर करने के लिए अधिकारियों के निरंतर दबाव से गैर–तेल व्यापार को सहायता मिल सकती है। वर्ष 2023 में मुद्रास्फीति के औसतन 4.4% तक रहने की उम्मीद है, जो 2022 में 4.8% रही। चूंकि संयुक्त अरब अमीरात आवश्यक वस्तुओं पर सब्सिडी बहाल नहीं करने की नीति को बरकरार रखता है। यूएस डॉलर के मुकाबले संयुक्त अरब अमीरात की मुद्रा दिरहम का मूल्य दिरहम 3.67:1 यूएस डॉलर, आगामी वर्षों में यथावत् रहने की उम्मीद है। गैर–तेल निर्यात की प्रतिस्पर्धा और विस्तार को बनाए रखने के विविधीकरण प्रयासों के सामने एक चुनौती है। संयुक्त अरब अमीरात का चालू खाता अधिशेष 2022 के जीडीपी के 22.4% से घटकर 2023 में 18.1% होने की उम्मीद है क्योंकि तेल की कम कीमतों के कारण निर्यात आय में गिरावट आई है और बुनियादी ढांचे व तेल क्षमता विस्तार के लिए पूंजीगत आयात अधिक बना हुआ है।

मिस्र

ब्याज दरों में वृद्धि और उच्च मुद्रास्फीति से 2023–24 में घरेलू मांग के बाधित होने की आशंका है। वैश्विक आर्थिक मंदी पर्यटन को प्रभावित कर सकती है, यहां तक कि मिस्र की कम कीमत वाली मुद्रा भी इससे अछूती नहीं रहेगी। मौद्रिक सहजता से पहले 2022–23 में वृद्धि दर घटकर 3% और 2023–24 में 4.1% रहने का अनुमान है। मुद्रास्फीति के 2023 के अंत में ही कम होने की संभावना है और केंद्रीय बैंक की 9% की लक्ष्य सीमा से अधिक होगी। वैश्विक ऊर्जा और खाद्य कीमतों में गिरावट अवस्फीति का समर्थन कर सकती है, लेकिन मुद्रा अवमूल्यन के संदर्भ में मौद्रिक सख्ती से मुख्य मूल्य वृद्धि को कम करने में समय लगने की संभावना है। एक अनुकूल आईएमएफ कार्यक्रम की समीक्षा और राज्य परिसंपत्ति की बिक्री के मामले में प्रगति से विदेशी मुद्रा उपलब्धता को बढ़ावा मिल सकता है। यह मौद्रिक सख्ती के साथ मिलकर, बाजारों को आश्वस्त कर सकता है। ऐसी परिस्थितियों में, पाउंड के 2023 में E£ 33.1: 1 यूएस डॉलर तक गिर सकता है। वर्ष 2022 में जीडीपी के 3.7% की अनुमानित कमी दर्ज किए जाने के बाद, चालू खाते में 2023 में जीडीपी के 3% की कमी हो सकती है। एलएनजी, पर्यटन और स्वेज नहर राजस्व सहित निर्यात में हालिया तीव्र वृद्धि में 2023 में वैश्विक वृद्धि में गिरावट आने से इसके धीमी होने की संभावना है। इसकी भरपाई कम आयात लागत से की जा सकती है क्योंकि प्रमुख वस्तुओं की कीमतों में 2022 के स्तर से गिरावट आई है। ■

मुद्राओं की स्थिति

सौजन्य : **ट्रेजरी एंड अकाउंट्स ग्रुप**

सूडानी पाउंड (एसडीजी)

SDG सूडानी पाउंड (एसडीजी) सूडान गणराज्य की राष्ट्रीय मुद्रा है और 1992 से देश में इसका उपयोग किया जा रहा है, लेकिन 2007 में एकमात्र वैध मुद्रा बन गई। इस मुद्रा का उपयोग दक्षिण सूडान द्वारा वैध मुद्रा के रूप में भी किया जाता है, जिसने 2011 में सूडान से स्वतंत्रता हासिल की। पूरे सूडान में भीषण लड़ाई ने नागरिक शासन में शांतिपूर्ण बदलाव की उम्मीदों को धूमिल कर दिया है। हालांकि सूडान में चल रहा संघर्ष निश्चित रूप से दक्षिण सूडान के आर्थिक संकटों में योगदान देने वाला कारक रहा है। राजनीतिक अस्थिरता और आर्थिक सुधारों की कमी जैसे अन्य मुद्दों को भी वर्तमान स्थिति में योगदान देने वाले कारकों के रूप में रेखांकित किया गया है। सूडान की मुद्रास्फीति जुलाई 2021 के 422.8% के उच्चतम स्तर पर पहुंचने के बाद अप्रैल 2023 में घटकर 63.3% तक पहुंच गई है। इसकी वजह मीट, ब्रेड, अनाज एवं फलियां और सब्जियों जैसी चार उपभोक्ता वस्तुओं के समूहों की औसत कीमत में कमी है जो कुल उपभोक्ता खर्च का 36% है।

अत्यधिक मुद्रास्फीति और स्थानीय मुद्रा की अस्थिरता के कारण, देश में अधिकांश लेन-देन यूएस डॉलर का उपयोग करके किए जाते हैं। हालांकि, फरवरी 2023 में, भविष्य के आईएमएफ समर्थित वित्तपोषण कार्यक्रम के लिए एक ट्रैक रिकॉर्ड बनाने की शर्तों के तहत दक्षिण सूडान की सरकार ने यूएस डॉलर के उपयोग पर रोक लगा दी है और सभी लेन-देन को स्थानीय मुद्रा एसडीजी में निष्पादित करने का निर्देश दिया। तब से, यूएसडी/एसडीजी में लगभग 6% की गिरावट आई है और वर्तमान में यह सीमाबद्ध स्तर पर कारोबार कर रही है। यूएसडी/एसडीजी की जोड़ी 19 जून 2023 को 599.85 पर बंद हुई।

ग्रेट ब्रिटेन पाउंड

£ ब्रिटिश पाउंड स्टर्लिंग यूनाइटेड किंगडम (यूके) की अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है। यूके उपभोक्ता वस्तुओं की लागत में वृद्धि के दौर से गुजर रहा है, जो उपभोक्ताओं की मजबूत मांग और आपूर्ति श्रृंखला की बाधाओं की वजह से 2021 और 2022 में बढ़ती मुद्रास्फीति का कारण है। खाद्य कीमतें भी तेजी से बढ़ रही हैं और अप्रैल 2023 में 19.0% तक पहुंच गई, जो मार्च 2023 में निर्धारित 19.1% के अपने 45 साल के उच्च स्तर से थोड़ी कम है। हालांकि, बिजली और प्राकृतिक गैस की कीमतों में तेज गिरावट के कारण मुद्रास्फीति परिदृश्य में सुधार हो रहा है।

मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए, बैंक ऑफ इंग्लैंड ने 11 मई 2023 को अपनी हालिया नीतिगत बैठक में अपनी प्रमुख ब्याज दर को एक चौथाई प्रतिशत अंक बढ़ाकर 4.5% कर दिया। इस तरह लगातार 12 बार दर बढ़ोतरी में 400 बीपीएस की संचयी वृद्धि की। इससे धन जुटाने की लागत 2008 के बाद से सबसे अधिक हो गई। इन बढ़ोत्तरियों के कारण, मई 2023 में शीर्षस्थ मुद्रास्फीति घटकर 8.7% हो गई। ग्रेट ब्रिटेन पाउंड (जीबीपी) इस उम्मीद पर सभी प्रमुख मुद्राओं की तुलना में बेहतर प्रदर्शन कर रहा है कि आने वाले महीनों में मुद्रास्फीति को कम करने के लिए बीओई को अधिक बढ़ोतरी करनी पड़ सकती है। अप्रैल 2023 से जीबीपी/यूएसडी में लगभग 12.20% की वृद्धि हुई है। यह 19 जून 2023 को 1.28 पर बंद हुआ।

घानियन सेडी

GH₵ घाना ने 1965 के बाद से उच्च मुद्रास्फीति और बढ़ते संप्रभु ऋण के कारण कई बार अपनी मुद्रा को पुनः जारी किया है। एक सेडी को 100 पेसेवास में विभाजित किया जा सकता है। घाना अपने सबसे खराब आर्थिक संकट से जूझ रहा है, पिछले एक वर्ष के दौरान वस्तुओं की कीमतें औसतन 41% बढ़ी हैं। सरकार ऋण भुगतान में चूक गई और उसे आईएमएफ बेलआउट के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए लेनदारों के साथ अपने ऋण का पुनर्गठन करना पड़ा।

आईएमएफ कार्यकारी बोर्ड ने 17 मई 2023 को घाना के आर्थिक सुधार में सहायता प्रदान करने के लिए 600 मिलियन यूएस डॉलर के तत्काल वितरण के साथ एक राहत पैकेज को मंजूरी दी। यह कार्यक्रम घाना सरकार के कोविड-19 के बाद आर्थिक विकास के लिए कार्यक्रम (पीसी-पीईजी) पर आधारित है।

पिछले साल, घानियन सेडी (जीएचएस) नवंबर 2022 के मध्य में यूएस डॉलर के मुकाबले लगभग 135% की गिरावट के साथ 14.25 के अपने सर्वकालिक निचले स्तर पर पहुंच गया। तब से, यूएस डॉलर/जीएचएस ने आईएमएफ सौदे के दौरान खोए हुए आधार को वापस पा लिया है और यूएस डॉलर के मुकाबले दुनिया भर में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वालों में से एक था, जिसमें लगभग 40% की वृद्धि हुई।

हाल के सत्रों में, धीमी बाजार गतिविधि के कारण, जीएचएस यूएस डॉलर के मुकाबले काफी हद तक स्थिर रहा है और यह जोड़ी 19 जून 2023 को 11.00 पर बंद हुई।

बहरीन दीनार (बीएचडी)

BD बहरीन दीनार (बीएचडी) बहरीन साम्राज्य की आधिकारिक मुद्रा है जो सऊदी अरब के बगल में फारस की खाड़ी में एक द्वीप राष्ट्र है। बीएचडी को आधिकारिक तौर पर बीएचडी 1 = यूएस डॉलर 2.659 की दर से यूएसडी में आंका जाता है। बहरीन दीनार (बीएचडी) कुवैती दीनार (केडब्ल्यूडी) के बाद दुनिया की दूसरी सबसे अधिक मूल्यवान मुद्रा है। बहरीन की अर्थव्यवस्था तेल और गैस, अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग और पर्यटन पर निर्भर करती है। वार्षिक आर्थिक रिपोर्ट के अनुसार, देश की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 2022 में 4.9% की वृद्धि के साथ दस साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है। वर्ष 2021 में शुरू की गई इस पांच स्तंभीय योजना का उद्देश्य अर्थव्यवस्था की दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना और कोविड-19 के बाद सुधार में मदद करना है। बहरीन का आर्थिक परिदृश्य तेल बाजार की संभावनाओं और संशोधित राजकोषीय संतुलन कार्यक्रम के तहत इसके संरचनात्मक सुधारों के एजेंडे के त्वरित कार्यान्वयन के परिणामों पर निर्भर है।

बहरीन के केंद्रीय बैंक ने यूएस फेड की बढ़ोतरी को देखते हुए 03 मई 2023 को अपनी एक सप्ताह की जमा सुविधा को 25 बीपीएस से बढ़ाकर 6% कर दिया। बहरीन आमतौर पर ब्याज दरों पर फेड का अनुसरण करता है क्योंकि यह यूएस डॉलर के लिए विनिमय दर को बनाए रखता है। पिछली तिमाही में, यूएसडी/बीएचडी सीमित दायरे में कारोबार कर रहा है और यह 0.37699 पर बंद हुआ। ■

एक्ज़िम मित्र

सौजन्य: **एक्ज़िम मित्र समूह**

भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ाने और भारतीय उद्यमियों के बीच व्यापार वित्त, ऋण बीमा और व्यापार से जुड़ी अन्य जानकारियों के प्रसार की विषमता को दूर करने के लिए इंडिया एक्ज़िम बैंक ने एक पोर्टल तैयार किया है। इसके मुख्य रूप से दो उद्देश्य हैं। निर्यात के लिए ऋण उपलब्धता के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराना और व्यापार से संबंधित सूचनाएं प्रदान करना। एक्ज़िम मित्र के जरिए ऐसे प्रयास करना, जिनसे भारतीय उद्यमियों की अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से जुड़ी जिज्ञासाओं का समाधान हो। इनमें से कुछ को नीचे दिया गया हैं:

ए4 आकार के कागज आयात करने के लिए आवश्यक प्रक्रियाएं

ए4 आकार का कागज मोटे तौर पर 4802 के 4–अंकीय एचएस कोड के अंतर्गत आ सकता है। आप पहले ईईपीसी डेटाबेस से 6–अंकीय या 8–अंकीय स्तर पर सटीक एचएस कोड की पहचान करना पसंद कर सकते हैं। आप आयात शुल्क के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए एक्जिम मित्र पोर्टल के निर्यात–आयात इंटेलिजेंस अनुभाग के तहत कस्टम ड्यूटी कैलकुलेटर का संदर्भ ले सकते हैं। आप आयात नियमों के बारे में सलाह लेने के लिए अपने नजदीकी डीजीएफटी या ईईपीसी कार्यालय भी जा सकते हैं।

पैकिंग क्रेडिट के बारे में जानकारी

प्री–शिपमेंट फाइनेंस (पैकिंग क्रेडिट) आपके बैंक के साथ आपके द्वारा स्थापित संबंध के आधार पर प्रतिभूति के साथ या उसके बिना प्रदान किया जाता है। कैश पैकिंग क्रेडिट लोन के तहत, बैंक आमतौर पर शुरुआत में प्रतिभूति–रहित पैकिंग क्रेडिट लाभ देता है। इसके बाद, बैंक प्रतिभूति की मांग कर सकता है। पैकिंग क्रेडिट हाइपोथिकेशन या गिरवी रखकर भी दिया जाता है। ऐसे मामलों में, अग्रिम राशि प्रतिभूति के सापेक्ष दी जाती है और प्रतिभूति निर्यातक के अधिकार में रहती है। निर्यातक के लिए बैंक के पक्ष में हाइपोथिकेशन डीड निष्पादित करना आवश्यक है।

चीन से लेड एसिड बैटरी स्प्रेयर (एचएस कोड 84249000) के लिए आयात लाइसेंस की जानकारी और आवश्यक दस्तावेजों की सूची

नियम 5 बैटरी (एम एंड एच) नियम, 2001 के प्रावधानों के अनुसार और 4 मई 2010 को संशोधित, नई लेड एसिड बैटरी के आयातकों का पंजीकरण करने का दायित्व पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) को हस्तांतरित कर दिया गया है। तदनुसार, आयातक 5 वर्ष की अवधि के लिए सीपीसीबी के साथ पंजीकृत होगा। नियम 5 (ii) के अनुसार, सदस्य सचिव या सीपीसीबी द्वारा नामित कोई अधिकारी पंजीकरण करने, रद्द करने या अस्वीकार करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी है।

एक आयातक नया लेड–एसिड बैटरी आयात लाइसेंस प्राप्त करने और नवीनीकरण के लिए दाखिल करने या अर्ध–वार्षिक रिटर्न और उपक्रमों को दाखिल करने के लिए `बैटरी पंजीकरण और प्रबंधन प्रणाली' (बीआरएमएस) पर एक ऑनलाइन आवेदन दाखिल कर सकता है। इस लाइसेंस को प्राप्त करने के लिए आवश्यक दस्तावेज हैं, ए) लैंडिंग बिल/एयरवेज बिल, बी) आयात लाइसेंस, सी) ऑनलाइन आवेदन के बाद निकाले गए फॉर्म ii और फॉर्म iii की मुद्रित प्रति, उस पर आवेदक की मुहर और हस्ताक्षर हो, डी) आयात–निर्यात प्रमाण–पत्र की स्व–सत्यापित प्रति, ई) प्रवेश बिल, एफ) वाणिज्यिक चालान, जी) बीमा प्रमाणपत्र एच) बीआईएस प्रमाणपत्र (यह उत्पाद की गुणवत्ता और सुरक्षा के बारे में आश्वासन देता है)।

अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्याज के व्यापारिक व्यापार के लिए मूल्य मार्जिन, अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए कोटेशन और आवश्यक दस्तावेजों के बारे में विवरण

कोई भी व्यक्ति एक्ज़िम मित्र पोर्टल के `एक्सपोर्ट आयात इंटेलिजेंस' अनुभाग के अंतर्गत `इंडिकेटिव स्टेप्स टू बिगेन एक्सपोर्ट' को देख सकता है, जहां मूल्य निर्धारण/लागत पर एक अनुभाग है। प्याज की कीमतों में उतार–चढ़ाव होता रहता है। कोटेशन निर्धारित करने के लिए, किसी भी व्यक्ति को विभिन्न कारकों की जांच करनी चाहिए जैसे ए) मात्रा, बी) भुगतान की शर्तें, सी) डिलीवरी अवधि, डी) पैकेजिंग, ई) उत्पाद की कीमत, एफ) वित्तपोषण की लागत, जी) माल ढुलाई लागत, एच) अन्य खर्च आदि।

कोई भी व्यक्ति एपीडा– *https://agriexchange.apeda.gov.in/Ready%20Reckoner/Export_Costing_Pricing.aspx*

द्वारा दिए गए निर्यात संबंधी लागत और मूल्य निर्धारण के स्पष्टीकरण को पढ़ सकता है। ।

कोई भी व्यक्ति ताजा प्याज के निर्यात दस्तावेज और प्रकियाओं के लिए निम्नलिखित साइट को देख सकता है–

https://agriexchange.apeda.gov.in/product_profile/Exp_document.aspx?categorycode=0201

इसके अलावा कोई भी व्यक्ति राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड पोर्टल के स्टैटिक्स एंड मार्केट इंफोर्मेशन अनुभाग के तहत प्राइस और अराइवल स्टैटिक्स के लिए निम्नलिखित साइट को देख सकता है–

आंकड़ों में भारतीय अर्थव्यवस्था

सौजन्य: **रिसर्च एंड एनालिसिस समूह**

वस्तु व्यापार

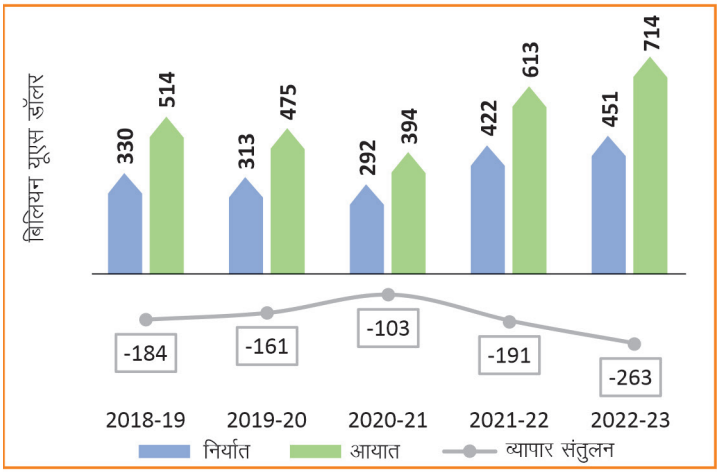

स्रोत: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

सेवा व्यापार

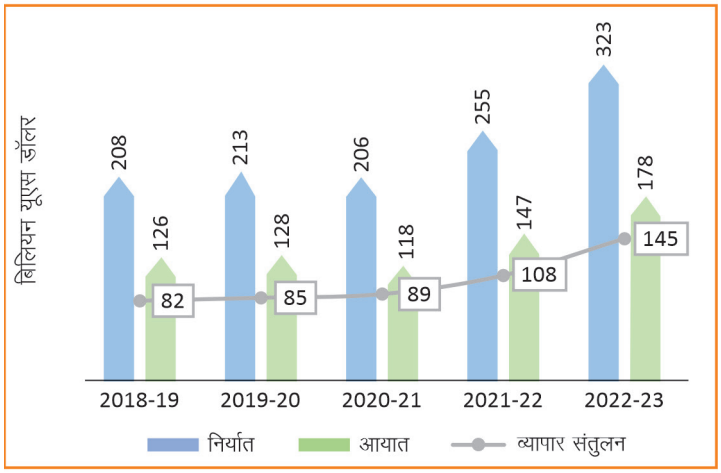

स्रोत: आरबीआई

चालू खाता घाटा

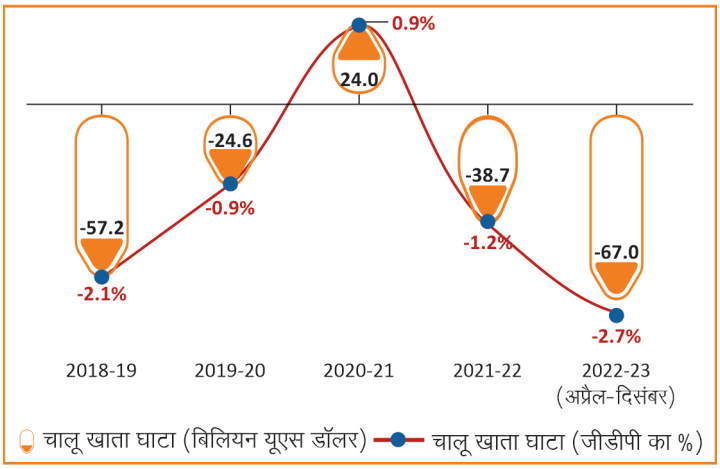

स्रोत: आरबीआई

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक

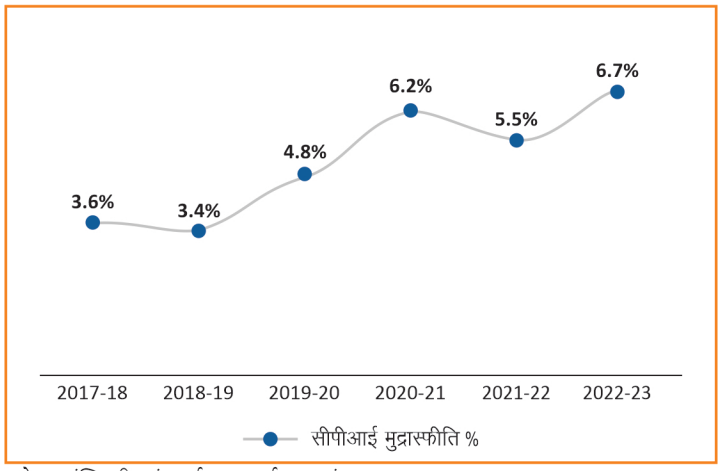

स्रोत: सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रत्यक्ष विदेशी मुद्रा निवेश का प्रवाह

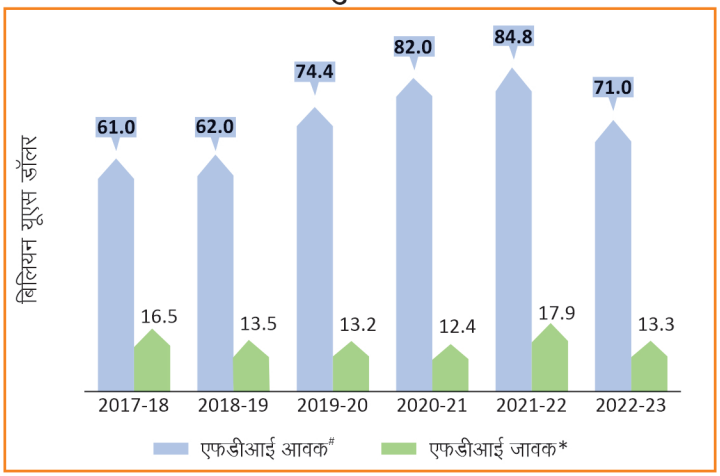

*नोट: *एफडीआई जावक वास्तविक आंकड़े दर्शाते हैं और इसमें इक्विटी, ऋण, इन्वोक की गारंटियां शामिल हैं।*
#एफडीआई आवक में इक्विटी, पुनर्निवेश आय और अन्य पूंजी शामिल है।
स्रोत: आरबीआई और वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

क्षेत्रवार उत्पादन

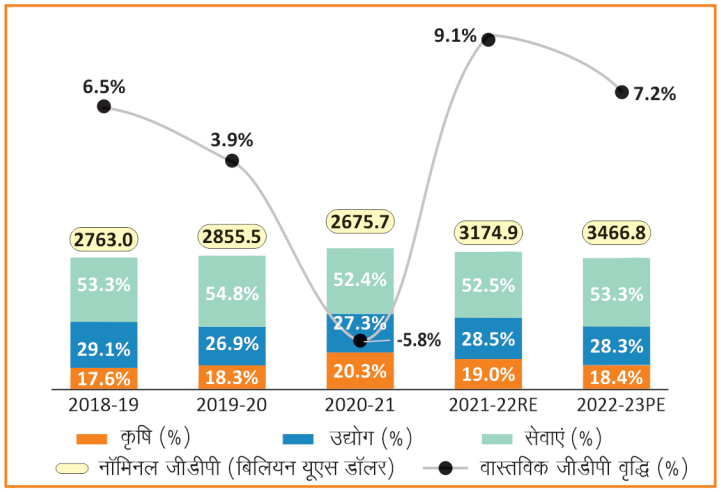

नोट: पीले रंग के आंकड़े नॉमिनल जीडीपी (बिलियन यूएस डॉलर) को दर्शाते है ;
आरई– संशोधित अनुमान ; पीई– अंतिम अनुमान
स्रोत: अंतर्राष्ट्रीय वित्त संस्थान फाइनेंस एंड सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार